भेर सम्बन् २४८६ कि. २०१७ ई. १८६० - *उस्मेल कीर अमरती* 

# पास्ताविक कथन

सामाजिक-त्रीवन की गाहों को ठॉक रूप में चलाने के लिये दो मार्ग हैं—प्रागार धर्म प्रोर घणपार धर्मे—प्रहुस्य धर्म पीर सामु पर्मे—राजनीति घीर धर्म-सीति ।

नियं समय मनुष्य पा सामाजिक क्य मही होता (तुमल-समय होता है) सो उस समय न राजनीति होतो है और न ही धर्मनीति। जब ममाज में दोष बढ़ते हैं तो फिर सामाजिक-स्प होना प्रारम्भ हो जाना है। धर्म की स्थापना होती है और उमका मुख्या 'कुलकर' कहनाता है। बह मुख्या धार्म को 'हुकार' पी दर्दनीति पर पणाना है। धार्म आवर धोर दोप बढ़ते हैं तो 'मकार' को दर्दनीति प्रवृक्ष होती है, दन प्रकार दोषों के धड़ते हुए प्रम में 'पिक्तवर' गीति, 'परिभाप' गीति, 'मण्डल-क्य' क्याउर-करी 'पारए' क केंद्र और 'राविदेश' क्यांनेद्र को भीतिएं प्रवृक्ष होती हैं। के में राजनीति की नीतिए है।

राष्ट्रनीति स्पापित होने पर प्रमेनीति स्पापित होती है।
यह भी एक सामाजिक स्त है परन्तु प्रयम्भरूपमं पर पर्वते
वाल सापशी का। इस सामाजिक संगठन की इस नीतित्
होती है। दे मीतिए, दरहनीतित् नही, प्रितु प्रायम्भित-नीतित्
है। देव, यनात् निमा जाला है कीर सामाजित, महर्च-नवधेकी
इक्सापूर्वक सम्भ कर पहुण दिया जाता है, माधुनुहर्मो की
मीतित् औ हुई, यहां बसान्-द्रवाव देवर काम सक्याने का
प्रश्न ही जाया नहीं होता, हा। प्रविचह दोकी, देश की

केशलिक्दा इंग्रहेंद्र यशस्ताम में सहा —कस्तरि के प्रकारि के दिवसिक ।
 वर्षिक्षाचे प्रश्नेद्रसर्वये प्राथण के स्वित्तिक के सा —विकारि कृति के इस ।



रंपर-विणिक्तरात्रों मोत्रखस्य पहो, तयो पहो तासि । विसो प पहाणांगं पच्छितं, जं च नाणस्य ॥ ससे परणं, तस्स वि नेव्याणं, परण-सोहणत्यं च । चिह्नतं, तेण तयं नेपं मोत्रखित्रणाज्यस्यं॥



सान यत्नापुर्वेक निक्तिसा करता। सकता है ऐसा तभी ती हैं जिल कि उस में वीर्याचार की कभी हैं। तथा निक्तिसा कराहें कहीं-न-कही। पसानपानी होना भी सम्भव है जिस में वार्यिक नार के दोग भी लग जाते हैं।

नीका द्वारा नदी को पार करना, वर्षा में लपु-शङ्कादि <sup>की</sup> निवृत्ति के लिये जाना इत्यादि अपवादों में शक्ति-हीनता <sup>की</sup> तो कोई बात नहीं, परन्तु इन सन में प्रसावनानी तो हो ही सकती है जो कि चारित्राचार के दोप हैं जिन का विउसम नामक पाश्ववां प्रायश्चित्त लिया जाता है। जितनी ग्रसावधानी जतना जसका प्रायश्चित्त, एक साधक की लेना ही चाहिये। ज्ञानावलम्बन, दर्शनावलम्बन एवं चारित्रावलम्बन से भी थ्रपवाद-मार्ग में दोप-सेवन हो जाते हैं श्रर्थात् ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की श्रपनी एवं दूसरों की वृद्धि के लिये उन दोप-युक्त कार्यों को करना पड़ जाता है, परन्तु ऐसा करने वाला सावक यदि अतिपरिणामक है अथवा अपरिणामक है तो वह दिप्पय-दोप का पात्र है श्रीर यदि साधक परिणामक है तो वह कप्पिय प्रायश्चित्त वाला माना जाता है जिस के लिये उसे श्रालोचना-मात्र करनी होती है जो कि प्रथम श्रेणी का प्रायश्चित है, परन्तु कप्पिय कार्यों में भी किसी परिणामक से जो-जो ग्रसावधानियां हुई हों उनका प्रायश्चित्त उसे पृथक् रूप,

जैसे कि साधु महाराज का व्याख्यान कराने के लिये जीव जन्तुश्रों से युक्त स्थान साफ करवाना, दरी विछाना, चान्दनी लगवाना ह्वा में चान्दनी का हिलना, दिश्यों के नीचे जीवों का दव जाना श्रीर साधु महाराज का वहां व्याख्यान करना श्रादि कार्य।

किष्पय=कल्पनीय ग्रर्थात् करने योग्य कार्य ।

से लेना होता है। किन्तु धतिपरिणामक के जो दिष्यय दोष हैं उनका प्रायक्षित तो बहुत प्रियक है भीर धपरिणामक को भी प्रियक प्रायक्षित लेना होता है।

एक ही प्रकार के दोप-तेयन के पीढ़ि नित्र-नित्त भागना के धापार पर उनका प्रापरिचल भी नित्र-नित्त होता है और कि शरीर की घोषा-काई की एक ही दिया है, परन्तु इस के पीढ़ि नित्र-नित्र भागना होने पर प्रलग-प्रलग प्रापरिचल है। निर्माण मूल के सीसरे उद्देश्य में धौर चोभे उद्देश में इसके लिए नणु-नास का प्राणनित्त है, पन्दरत्वें उद्देश के मूल १०विं भीर १०४ में लणु-चोमानों घोर अद्देश एवं साववें उद्देश में मूल्लोमानी प्रापरिचल का विधान किया एका है।

- र, स्पंतृतंत्र कार्य कार्य के को दोव रि
- २. निरोष दा ३। २०-

े विश्व माणको पाद श्रीकोडमारियाँको पा उपियोदमापियोच्या का प्रश्लीकेश मा पर्वोद्यक्ष का, उन्त्रीको वर पर्वोद्यक्षे मा साहणह, स्रोतिका सारक्ष्य साधिय परिद्राग्द्रातो सम्पादके।

#### निर्दाध गुरु ४ । ४--

ं भिष्य कामान्यस्य यात्र गंकितमः विषये याः विभिन्नेदाः विषयेमा मध्यपुरिवेशः या प्रयोगान्यः याः, प्रश्लीतंत्रः माः परीक्षते साः स्वाप्तस्यः, ते वेषसाले स्ववत्त्रः व्यक्तिये पर्यवस्त्राम् सम्बाद्धः ।

#### विष्णुक ध्य १४ । १५ ---

के विषय कार्याकियास मा मार्गित्यास सा प्राप्तनी यहाँ कीसीहरू विषयेका का वर्गित्याकारियांचा मा कार्योक्तान या क्यीकात साह सम्मीनार्व मा प्रमेश्वेत मा मान्यवद्द, से श्रेमाकी कार्याका सामग्री HERRICA CONTRACTOR

ो भिक्त किर्मान्यिका वापको पाप भीकोरम विषेष वा द्यमिकोदमन्त्रिके वापकोष्ट्रेन वापकोष्ट्रेन वाप्योविक वापकोष्ट्रेन वा प्रभावति वामाद्वका, ते में मार्गे वाक्कार ना स्मानिक परिहास्ट्रामें द्यमार्थ ।

निशीम सूप ६ । २८--

के भित्रमू भाउम्मामस्य भेहुण-पष्टिपाए अध्यक्षे पाए गीष्पंदन-विष्टेग् मा उसिगोदग-विष्टेग या उन्होंसेक ना प्रभोदक या, उन्होंसंत या प्रोधंत वा साइकार, तं सेवमागे ख्रावकार चाउम्मा-

: सियं परिहारहाणं श्रणुग्वाङ्यं । नियोध सूत्र ७ । १८—

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण्-पिटयाएं ग्रन्नमन्नस्म पाए सीश्रोदग-वियडेण वा, उसिगोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलंतं वा पधोश्रंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे श्रावज्जइ चाउम्मा-सियं परिहारहाणं श्रागुष्वाइयं। (६) सायपानी रराठे हुए भी उन कृतयोगी की, प्रपयाद रोयन करने के पीछ तथा भाषना काम करती है ?

दन वातों का विचार कर निने पर तब कहीं जा कर प्रायम्बित का निर्णय हो पाना है 10

यन सामान्य एत से फिछ-फिस दीप का क्यान्यया प्रायदिक्त होता है इस प्रकार यस प्रायदिक्तों का यभैन नगाः क्या जाता है—

पायच्छिनं दसचिहं पगणसे तं जहा— (१) मालोगणारिहे, (२) पटिक्यमणारिहे, (३) ततुभगारिहे, (४) विषेगारिहे, (४) विउसनगरिहे, (६) तवारिहे, (७) छेपारिहे, (८) मृलारिहे, (६) मणवर्ठणारिहे, (१०) पारंचिपारिहे॥ —भगवते गुण २४।ऽ।६॥

# १. आलोचना-

काणिण्या से जीता, नेत् छपडनस्य निस्पारस्य । ब्रह्मस्यस्य वितादी, पद्गी धालीवणा मणिया॥ (धीरस्य द्य)

परिणामक द्वारा जो कल्य कार्य उपयोगपूर्वक निर्तिनार-हप से किए जाते हैं, छमस्य होने के नाते संभावित ग्रितिम श्रादि की विभेष-शुद्धि के लिए साधक श्रालोचना करता है जो कि प्रथम प्रायश्चित है। जैसे कि—

1. भिरत् य गणाची श्रवकम्म परपासंड-पडिमं उवसंपजिताणं विहरेजा, से य इच्छेज्जा दोच्चं पि तमेव गणं उवसंपज्जिताणं विहरितणः, निर्धणं तस्स तप्पत्तियं केइ छेण् वा परिहारे वा नन्नत्थ एगाण् श्राकोयणाणः । —व्यवहार सन्न ११३२॥

जो साघु अपने गण सम्प्रदाय का त्याग कर अन्य धार्मिक सम्प्रदाय अङ्गीकार करके विचरे और पुनः पहली सम्प्रदाय में श्राना चाहे, तो उसे कोई दीक्षा-छेद व पारिहारिक तप का प्रायश्चित्त नहीं श्राता केवल एकमात्र उसे श्रालोचना करनी होती हैं। [क्योंकि उसने अपने संयम में कोई दोप नहीं लगने दिया है।]

- (२) निग्गंथं च एं राष्ट्रो वा वियाले वा दीहिषिट्टी लूसेउजा; इत्थी वा पुरिसस्स श्रोमञ्जेज्जा, पुरिसो वा इत्थीए श्रोमञ्जेज्जा, एवं से कप्पद्व, एवं से चिट्ठइ, परिहारं च से ए पाडणइ—एस कप्पे थेर-कप्पियाणं; एवं से नो कप्पद्द, एवं से नो चिट्ठइ, परिहारं च गो पाउणइ—एस कप्पे जिया-कप्पियाणं।

  —ह्यवहार सूत्र ५।२१॥
- \_ साधु को रात्रि व सायं के समय किसी विप-धर सर्प ते काट साया हो, उस समय उपचार जानने वाले किसी पुरुप का योग न मिले श्रीर स्त्री का मिलता हो, तो स्त्री के पास से उपचार करा लेवे; इसी प्रकार साघ्वी को काटा जाने पर उसे उपचार जानने वाली स्त्री का योग न मिले श्रीर पुरुप का मिलता हो, तो वह साघ्वी उस पुरुप से उपचार करा लेवे,

इन प्रकार करना उन्हें कलाता है भीर इस प्रकार किया जाता है, उन्हें किया प्रकार का पाण्डिए कि तब भागरिक्त नहीं भाता—यह स्पविर-कलियों की मर्यादा है। परन्तु जिन-कल्यो सापु की ऐसा परना नहीं कल्यता है भीर न के ऐसा परते हैं, न करने पर उन्हें कोई पारिहारिक प्रायश्चित नहीं भाता। (कल्य-प्रायश्चित, केयन भानीवना करनी होती है)

(३) निराण्य इच्छेहता गाँ आनिष्य, मी से बायइ भेरे काहा-पुलिक्षण गाँ भागित्य, कायइ से भेरे साइण्युक्त गाँ शामित्य । भेरा य से निरोध्ता, गुर्व से बायइ गाँ भागित्य; भेरा य से मी विरोध्ता एवं से भी कायइ गाँ भागित्य । जावार्त भेरीई साविद्रमाँ गाँ भागेद्द. से मीत्रा सेयु मा पविद्यो वा । ते से साइनिया हहाए निर्द्यात, माँग मी सेयि केई सेप मा पविद्यो वा ।

निमी सामक के मन में कुद्ध मानुर्धी की साम विकर निजरते की द्रुप्त हुई, हो। उसे रचनित्र भगवान् से विना पूछे ऐसा करता गांचा हुई, हो। उसे रचनित्र भगवान् से विना पूछे ऐसा करता गांचा है। रचनित्र भगवान् सामा देवें हो। मानुर्धी को मान नेपत्र विपरण कर महत्या है, यदि से स्मारा ने देवें हो। ऐसा करता मही बहाता। जो वाधक स्पन्ति भगवान् नी सामा विना सापुर्धी को माम देवें जिल्हें दिन विवार, पत्र में ही। दिन का नेपत्र देवाने ही। दिन का नेपत्र देवाने ही। दिन का नेपत्र देवाने ही। दिन का प्रमुख्य देवाने सापूर्णित करता है। परमुख्य सापूर्णित करता है। परमुख्य सापूर्णित करता है। इस्तु स्ति सापूर्णित करता है।

## २. मित्रमण-

the the appropriate and a second some of the time

हम तीलरे धापित्वल में, दोपा को साता का भी की जाती है भीर मिल्पाद्यक भी दिया जाता है। यह जिन्निर्न की दोपों का होता है वे इस पानर है

महभारतावरणा में, भगावरणा में, रोमावरणा में द्रणा होत. काल एवं भाव की लागद् खारणा में, उत्मुह्यापूर्वक ही प्रता से कार्य करने में, अनुजान-पन में, कोई कार्य धाने वज्ञ के वाहिर हो जाने से उस समय जान, दर्शन, एवं चारित्र के मूलगुणरूप पाल्न महावर्ती तथा उत्तरगुण दश-विध प्रत्या- स्वान पाल्न समिति श्रादि में जो श्रतिचार लगते हैं श्रथवा श्रतिचार-विषयक श्रागंका होती है तो उस श्रवस्था में यह तीसरा प्रायश्चित्त किया जाता है।

इसी प्रकार जो-जो दुश्चिन्तन किया हो, दुर्भापा बोली हो, दुष्क्रिया को हो तथा उपयोग लगाने पर भी जो देवसी स्रादि श्रतिचार स्मृति में न स्रारहे हों उन सब का 'तदुभय' प्रायश्चित्त होता है। व्यक्त प्रयोत् गीनामं द्वारा भगवाद-मापे में पानरण करते, उपयोग रणते हुए भी क्षान, दर्भन एवं नारित्र के हेतु को मकरमान् विराधना होती है ती उनका 'वरुभय' प्रायद्भित हेला है।'

## ४. विवेक-

पिण्डोयहि, मैद्याई महित्रं कडत्रोगिणोवडकेण् । पच्छा नापमगुद्धं, सुद्धो विहिणा विविद्यन्तो ॥ कालाडदाणाइन्द्रिय-धाणुन्गयस्थमिय-मदियममदो छ । काणा-महित्य-द्य्यस्यिं मनाइ-विविधित्रं गुद्धो ॥

भीवर, बर्ग ग्राहि उपकरण एवं राज्यदि, महामेरो क इतान्यामी द्वारा उपयोगपूर्व गृह्ण करते के पक्षार् शयकार हो कि यह मृहोग वस्तु सदीग है क्यूड है, की विधित्यंक उपकारयान करते हो, बुद्धि है जो कि बच्चे प्राप्तिक है।

द्वी प्रकार प्रयम प्रारं में भी बाल घड़ाई प्रवर में गई जाने यह गारी चमते जीत-वाल माइल में इनर यो लाने में एवं प्रत्या रहित हो बार मूर्योदय में पूर्व एवं मुर्गाहत में प्रवाहत मन्द्र में क्षण तब लेने बह तथा घोड़ कि प्रभी मूर्योदय महीं हुएन चम्हा कार हो जुना है तो उस बस्तुवी विधिन्त्र हैं स्थाप महीं में हुईत महीं हैं।

होती है निवित्त, सामापि महामाह है निवित्त, बार्यवाहरू साम्बर्ज निवित्त, सम्बाह्य बार्याहरू को तोड है जिल्हिन, पुलिय करतु के सहस्य प्रहार कर की के काला और साम्बर्णका से सरिक बर्जु बहुत कर की को हो हो तो वह

E. Praviananichani martin na estitus

इस प्रकार चार भेद होते हैं—(१) लगुमास<sup>1</sup>, (२) गुह्माः (३) लघुचीमासी, (४) गुरुचीमासी । इन चारों के कि तीन-तीन भेद किए गए हैं—

- (१) परवश-पने किसी म्लेच्छ श्रनायं राजा श्रादि त्व देवता के दवाव से सेवन किए गए उपयोग रहित दोपों के प्रायश्चित्त।
- (२) स्वयं श्रातुरता से उपयोग सहित सेवन किए <sup>ग्र</sup> दोपों के प्रायश्चित ।
- (३) जान-वूभ कर मोहनीय-कर्म के उदय से मूर्छा<sup>भाव</sup> भूर्वक सेवन किए गए दोपों के प्रायश्चित्त।

इन वारह प्रकार के तप-प्रायश्चित्तों के जघन्य, मध्यम् स्रोर उत्कृष्ट तीन-तीन भेद कर देने पर कुल छत्तीस भेद खनते हैं।

इन छत्तीस प्रकार के 'तप' प्रायश्चित्तों में कौन-सा त्प ग्रीर कितना तप होता है यह प्राचीन श्राचार्य देवों की धारणा-नुसार नीचे के कोष्ठक में दिया जाता है—

उत्कृष्ट तप-प्रायश्चित्त छुः मास का होता है, ख्रतः छुः मास के भो दो भेद गण्ना में ख्राते हैं जैसे कि लघु-छमासी १६५ उपवास, गुरु-छमासी १८० उपवास।

- तखु-मास से भी छोटा तप-प्रायश्चित्त 'भिन्नमास' श्राया है जो कि २५ उपवास का होता है।
- २. पंचिवहै ग्रायार-पकष्पे पएण्ते तंजहा—(१) मासिए उग्वाइए, (२) मासिए ग्रमुम्बाइए, (३) चडमासिए उग्वाइए, (४) चडमा-सिए ग्रमुम्बाइए, (५) ग्रारोवणा ॥

- टाणांग सूत्र प्रशिशा

報告の まか	A STATE OF THE STA	king belief handside	الرتيك		क्लाहरत के द्रमत्त्व गृहित	1961	H'CHIT	में हमीन क्योंन मृत्रीमत्त्र मे	712.14
なのがみない	Tie Tie	21.41.42	47.4	E T	11.45	11.1	12.11	व्यक्त	ail.
Late has	, E	1	**	7		S. A.	* 5		AT AT
		***	6.4			***	- 11	1	Time.
	* -		ar and		1	THE PART OF THE PA	-44	-29	The second secon
There is an			* FFEE	FEF	-aff		~客管管理多		

इ. रहाता में जार है करा वह इसके देश का तुन देशा

सकान में गर्भना अमतना एवं अन्यवहून स्पेयहून स्नादि एडाम्पाय-पाल में स्थापनाय करने, करवाने एवं अपने बादे वे समझ सम्मान ने समुशोमानी प्रायदिक्त धाला है।

 प्रे. ने निक्य है हिन्साई समीमानगाई कारण्या उपिन्याई समीम-याई मागृह, वार्षि या माहत्रहर, में सेवनाये बाजगाह काउमानिये विद्याद्वाने जन्माहये। — निर्दाण पुर १९१९०१

समाद के कारत शिष्यों की त्रममः न पदाने ने घीर क्रमशः र पदने पाणी को घण्या मगमने के लगुर्शमानी प्रायम्बन मना है।

 ५. त्रे क्लिन् गव-बंध्येसई धवापुण वयिक्तमुर्थ गापुर, वार्त्त क्षा स्ट्राव्य, त्रं सेवनाके धावाल् चायामानिवं परिवाहकं बाराइमें ।
—िरारीय या १९४१०३

भाषाराष्ट्र सुष बहात् विवा तालीत समयापीत पादि पास बहाते, पाने भाग की प्रणा स्वभने ने सन्तीयाधी सामस्थित पाता है।

4. से धिक्य राज्यं आगुर, मार्ग्नं का मार्ग्यत्र, में कियार क्यांचा शायुर, कार्न्नं का साहायप्त, से निक्क यांने में वायुर, से मार्ग्यं का साम्प्रशाह, से मेनायांचे सामान्त्रत्र साहासार्थिकों करिकान्त्राणे कामान्त्र्यं ।

······· 有斯拉拉 整度 \$\$ 提出完全会会

त्रभाग क्यार में जनगण प्राप्ति के क्योंपूर शृंखण शास्त्रक स्था स्थापन व मी यहास्य प्रोप प्रश्न की स्वतंत्रक कींप्र - इप्रे स्थाप्त स्थापना को एवं स्थापनीयानी व्यवश्चित्रक स्थापन है ।

के कि समार्थि काराव्यी होते । या गाम के जिल्हा का विस्तित

mm 智問問 我世 家住信息

माद के कारण गोण विवे विका प्रयत्त रामद्वेष के गणी-हेकर, सम्-प्रायश्चिती को गुरु-प्रायश्चिती कोर पुरु प्राय-हे को सप्-प्रायश्चिती कहते वहि और इने घटता समस्ते सापन को गुरुपीमासी प्रायश्चित खाला है।

 के किस्सू शहरतेकाणाय वर्णानरेट, यर्गानवेर्त का साहणट, ल्यू वर्णानक्ष्मण क वर्णाकरेट, न वर्णानुकी का साहणट, में ले शाकाट व्याटकारियो कीहमहासे स्थानकार्य ।

miss, cuter til telar, uin

प्रमाद के नामण भवता धामिनिविधिक प्रशास के नारण (मण-काम में पर्वृष्य करता धीर पर्वृष्ण-कार में पर्वृष्ण रते भीर इने बनार सममने में गुरुवीमानी धामिन्स । है।

के शिक्त अनुभी बाह्यतीत् कार्यामानम्म् वास्त्राम् कार्यानिके
पृत्रपृत्ति विकाले बाजस्य वाक्यमानिकं परिवाहम् कानुभावते ।
.....विकाल स्वाह्य कार्यामानिकं परिवाहम् कानुभावते ।

ली धारी कन्तरिक पूज्य कुत्री की कोई कामालना करता वे व्यापनिता करते वारे जी धन्सा समयना है को एप अ कुँद मुक्तामामी कर सामित्र साला है।

भ् हे किक्न दिशाकीयरक्ष भवन्ते स्वाद, सर्वन का शाहरापू. अन्तु द्वाद वीक्ष्यक्र सावर्ष स्वाद, अर्वने द्वा शाद्यद्व, में बोद्यानी समुक्ताप्रदर्शनमें प्रतिद्वाद्वाने सम्बन्धापुर्व (

mages of the Atlantature

हीर्रोकेस्पर्दोक्त साथ कालाव स्थापित के निम्नकार्यकार श्रीव स्थाप एक स्थापित कालाक्ष्यकार स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित



इ. ते निरम् मृत्तिस्य पुलेय छमातं या, यामं या, मगद्भं या तहमं या पहिमालंद, परिमार्टतं या साहमद्द, वे निरम् मृत्तिस्य एलंसु वा मा, पदिमालंद, परिमार्टतं या साहमद्द, वे निरम् मृत्तिस्य एलंसु वा मा, पदिमालंद, परिमार्टतं या साहमद्द, वे निरम् मृत्तिद्वयुक्षेत् यार्टितं परिमार्टतं या तहमद्दे वे निरम् मृत्तिद्वयुक्षेत् परिमार्टतं परिमार्टतं या तहमद्दे में से सेमारो सावगद्द साहस्मारियं परिमार्ट्यां तायाद्द्यं ।

—क्रिकीय सूच १९१२क,२८,२४०

पूर्वज्यसीय कुलों से बाह्यर पानी, यन्त्र पान, तथा यनति-एमा लेकर जिन-सामन को धर्मह्त्यना में निमित्त दनने धाने हो हो धन्हा समझते पाते साधक को समुगोमानी प्रायश्चित गना है ॥

१५. वे निवस् एडियाई शालने क्रीको छपुत्रं कामानिएके धरेड, घरेले
 ११ साहाज्यह, से सेवसाको कालाल्यू लाडमानिको परिवादाण जन्माइमे ।
 —िनिर्माद स्था ३ शावा

्रों सामक दुरेन्द्रे सम्पर्न सम्बेधिय पाने की स्टब्स् रिनन्यासन की सबहेनता जायना है और इसे समझ समझना है तो त्रमें नम्बोधानी सामस्थित साता है।

६६, वि विकास विकास क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्ट स्वार्टेस्ट सा नाइक्ट्रः वे विकास विकास विकास स्वयंत्रां क्रिक्ट सा स्वित्र सा स्वत्रः, वाल्वि क्रि सहस्त्रत्, से वेद्यास्त्री बाल्य्यम् चार्यस्तिये विद्यालयुक्त बाल्यम्ब ६ ----वित्रांत्र ब्रुट इ व्हाइड, इ क्रा

करे बार्यन, दिवाँ। कैंग्यार कोर्य कर प्राप्त करा प्राप्त करा, वसकी देवका के कुम्पूर्य जोशार कुर शासन के प्रियं से कर विरोधारण की दिवार का दिख्या प्रमुख्य कुर शासि हुआ के प्राप्त पार्ट, की जिसे सुद्दानीयाओं का अवस्थित काला, है द इत्यादि श्रनेकों प्रकार के दर्शनाचार-विषयक दोषों के प्रायश्चित्त समभ लेने चाहियें।

श्रव चारित्राचार के प्रायश्चित्तों का वर्णन किया जाता है।

विषय, कषाय, निद्रा, मद श्रीर विकया रूप प्रमाद के वशीभूत होकर चारित्राचार में जो दोप लगते हैं उनके दो भेद होते हैं, मूलगुण के दोप श्रीर उत्तरगुण के दोप। श्रीहर्सा, सत्य, श्रस्तेय, ब्रह्मचर्य, श्रपरिग्रह विषयक तथा रात्रि-भोजन तथा विषयक दोपों को मूलगुणों के दोप कहा जाता है श्रीर पाञ्च समिति, तीन गुप्ति, श्राहार, विहार, एवं दशविष्ठ प्रत्याख्यान विषयक दोपों को उत्तरगुणों के दोप कह जाता है। इन सव दोपों के प्रायिश्वत्तों का वर्णन कमशः इस प्रकार है—

### मूलगुणों के प्रायश्चित्त--

ने भिक्त् माउग्गामं मेहुण्-चित्रयण् वित्रवेद्द, विश्ववंतं वा साइजाइ,
 तं सेवमाणे श्रावज्जद्द चाउम्मासियं परिहारहाणं श्रणुग्धाइयं ।

--- निशीय सूत्र ६।१॥

जो साधक किसी स्त्री को मैथुन भाव से कोई वचन कहता है और इस प्रकार के वचन कहने वाले के श्रशुभ विचारों में रस लेता है तो उसे गुरु-चीमासी प्रायश्चित्त श्राता है।

२. जो भित्रक् माउग्गामस्स मेहुण-बडियाए लेहं लिहड्, लेह लेहावेड्; लेह-बटियाए बहियाए गरस्ट्र, गरस्ट्रंनं वा साइज्जड्, तं सेवमाखे श्रावज्जड् चाउम्मालियं पिहारहाणं श्रणुम्बाइयं । —निशीय सूत्र ६११३॥ ती गायक विभी स्वी की सेपून भाव से कोई पत्र लिएता इं करवा इसके से लियावाता है कीर सिराने के लिए गाहिए पुरास्त स्थान में महार एक ऐसा करने बाने के विचारों से इस तैना है भी उने मुख्तीमानी प्राथम्बर काला है।

 के निमधु माल्यामस्य मेलूग्-यविषाम् कथतं तुरसः, कल्दं एम, कल्द्र-विदेशम् सम्बद्धः, सम्बद्धं का स्वद्रमञ्ज्ञः, सं सेवसम्बद्धः वाल्याव्हः सरमानिषं विविधानुष्यं क्रामुख्याक्ष्यः। — विश्लेष सूत्रः ६१३६०

नी मापक माना के महत करियों वार्या विसे म्यों में हैमून में भाव से किसी के साथ करेटा करना है, बनेशकारी कथन मेराता है, बनेश करने के लिए प्रकी को शोह वर्षहर प्रमय रूपता है और ऐसा करने थाने के विनाशों में क्य नेता है तो उसे मुक्त-बोमासों का प्रायम्बन साक्ष्य है।

प्र. ते लिल्लू माहासामान सेंहूल-विद्याण करायां पायाद यहेंद्र, यहेंते या साह्यत्रहः ले निकल्लू माध्यसामानम मेहूल-व्यक्तिण चीन करतं स्थान यहेंद्र, ध्रांते का साह्यत्रहः, ते शिवाली क्षात्रणह कर्याणीनां प्रतिसाहाली कांगुल्याहर्ते । ——विद्यांत्रहर्ते कांगुल्याहर्ते । ——विद्यांत्रहर्ते कांगुल्याहर्ते ।

की सामने मोतुन्तरम् इन्हिमी प्रानी निकी नहीं ने गाय मेदन के भारत रे ध्याद काविश्वत तथा मीन्सम् गार्के सम्पोक्षेत्र मारण नावला है एवं ऐसा कार्य आगे के विश्वामी से कर देखा है से एस पुरान्धीमानी का प्रशास्त्रिक नेसा होता है।

की पाधकों मेरणुक्तायात दिल्की करों के बीतून के बात्र करा जार बार्क परित्र संस्थित काल की कीय तेतार कार्य करों कोई बार्की कार्य, संस्थित पुरुक्तीसामी बार्कीक्षण धाना है है ६. वे (अञ्च मार्ग्यसम्बद्ध मेन्स्पर्नन्तमः नोरं ता, तृत्या, त्राण्यं ता, सूनं ता, समर्थ ता, मार्ग्य ता, मन्त्रितमे ता त्रातमं ता सूनीतं नार्य त्रातमेत्र, त्रारामंतं ता माद्यत्वतः, सं भेतमासे त्राप्तातः नाडमाणि प्रतिस्तरामं नाम्याद्यते ।

जो सामक यमि माना के समान किसी रती के माप मैग्न करने के भाग से दूम, दही, मागन, गुए, साफर, इनहर, मिश्री एवं यन्य कोई प्रणीत याहार करता है, एवं ऐसा करी बाले के विचारों में रस लेता है तो उसे गुरुतीमासी का प्राप्त श्चित्त श्चाता है।

७. जे भिराल् माउग्गामस्स मेतुगा-पष्टियाण् तेर्च्छं श्राउट्ट तेर्घ श्राउट्टंतं वा साइजार्, तं सेवमाणे श्रायज्ञार् घाउम्मासियं परिहार्छा ——निशीय सूत्र ७।७१ श्राणुग्वाह्यं ।

जो साधक किसी स्त्री के साथ मैथुन के भाव से शरीर व चिकित्सा स्वयं करता है श्रीरों से करवाता है श्रीर करते हुँ<sup>9</sup> को श्रच्छा समभता है तो उसे गुरुचीमासी प्रायश्चित्त श्राता है

८. जे भित्रस् माउग्गामस्स मेहुग्-पडियाण् मणुद्धाइं पोग्गल उविकरइ, उविकरंतं वा साइजइ, तं सेवमाणे श्रावजइ चाउम्मारि परिहारद्वागं श्रणुग्वाइयं। — निर्शाय सूत्र ७।८

जो साधक मैथुन भाव से सुगन्वित पुद्गलों को, शरीर विस्त्र पर ग्रथवा स्थानक में विखेरता है एवं इसे ग्रच्छा समफ... है तो उसे गुरुचीमासी प्रायश्वित ग्राता है।

ह. जे भिक्क माउग्गामस्स मेहुण-पिडयाए ग्रसणं वा पाणं वा खाइमं
 वा साइमं वा देइ, देंतं वा साइजइ; पिडच्छइ, पिडछंतं वा साइजइ, तें
 सेवमाणे श्रावजइ चाउम्मासियं पिरहारद्वाणं श्रणुग्वाइयं।

—निशीध सूत्र ७|८५,८६॥

को सामक मैयून भाव से किसी की धारार पानी देता है, देनवाता है और देने याने के धारुभ विचारी में रख तिसा है, इसी स्वार मैयून भाग से धारार पानी प्राय करून करता है भीर त्में धनार सम्भाना है सो उसे गुरुबोमासी का आपित्वस नाता है।

१६. ते निक्ष् मारम्यामस्य मेटुए-परिवाह कर्य वा परिवाह का सेवर्ष मा पायप्रवाही या हैइ. हिंग्या माहणा, परिवाह, परिवाह का साहणह, से मेप्रमाण बावण्य ताहम्यान परिवाह का बाहणह ताहमानि व परिवाह का बाहणह ताहमानि व परिवाह का बाहणह ताहमानि व परिवाह के बाहण्य का वाहणह ताहमानि व परिवाह के बाहण के वाहण्य के वाहण्य के वाहण्य का वाहण के वाहण्य क

—िनिर्मायसूत्र कारक,वटाः

त्रों सापक मैजून भाव में विसी की वहत, पात्र, नम्बल, पारमीशन देता है, दिलवाता है और इसे घन्या समस्त्रा है, इसी प्रहार मैजून भाव में स्वयं घट्य करता है तथा इसे घन्या समस्त्रा है की जी पुरुषोस्तर्ग का प्रामदिवस कारा है।

की माध्य किसी राभी में सैनान के भाव के उसे पराया है समका एसमें पदार है सीह ऐसा कहते चार्य के दिवानों से रामानुष्टेंत समजा है की दाने मुख्यीससी का अन्योदाया साका है।

क्षके में रिक्बल् क्याप्रवाणसप्तय हें हुल करिया में स्थानकी स्पित्त स्थान क्याप्त क्याप्

राज्या के कराते हैं कियाँ क्षेत्रावर हैंग किया हिन्दी कराय के किया है सेवास कावत हैं किया है कार्काल साम में हिन्दी हैंगा है जाकों को सन्दर्भ सम्भवा है तो। से मुख्योगासी का पापित्र । साज है।

13. निमालिं च मं मिनायमानिं मामा चा भिष्णी वा प्षार्व पिन्न्यम्या, मं च निमंत्रे साद्विचा, मेह्मपित्येवणाने वार्विं चाउम्मानियं पिनास्त्राणं चण्यमाह्यं । — वृह्यकल सूत्र शृह्यं

कारण पड़ने पर कोई सांचु किसी सांच्नी की कृम्णानस्य में सेवा करता हुया उसे माता नहिन न पुत्री समक कर कर रहा है, परन्तु इस बीन उसका मन विकृत हो जाए अर्थात् मैथुन के भाव आ जाएँ तो उसे गुरुचीमासी का प्रायद्वित आता है।

१४. निग्गंथं च गं गिलायमाणं पिया वा भाषा वा पुत्ते वा पिलास्तगृज्ञा, तं च निग्गंथी साइउनेज्ञा, मेहुग्यपिडसेवणपत्ता ब्रावज्ञाः चाउम्मासियं परिहारहाणं ब्राणुग्वाङ्यं । —नृहत्कत्प सृत्र ४।१०।

किसी कारण के आ पड़ने पर कोई साघ्वी किसी साधु की रुग्णावस्था में सेवा कर रही है और अपने मन में पिता भाई व पुत्र की भावना लिये हुए है परन्तु वीच में यदि उसके मन में मैथुन के भाव आ जाएँ तो उसे गुरुचीमासी का प्रायश्चित्त आता है।

१५. निग्गंथीए य राश्रो वा वियाले वा उचारं वा पासवर्णं क विगित्र्वमाणीए वा विसोहेमाणीए वा श्रव्रयरे पसुजाईए वा पिक्खिजाईए वा श्रज्ञयर-इन्दियजाए तं परामुसेजा, तं च निग्गंथी साइज्जेजा, हत्थक्त्म-पिड-सेवणपत्ता श्रावज्ञइ चाउम्मासियं पिरहारद्वाणं श्रणुग्धाइयं।

—बृहत्कल्प सूत्र ५।१३॥

कोई साब्वी, सायं अथवा रात्रि में उच्चार-प्रश्रवण करने गई, किसी जीव-जन्तु अथवा काष्ठ आदि का उसके शरीरा- यव-विशेष से सामें हो जाने पर यदि वेद-सोह उदय हो लाह या इस सामें की कीर प्राप्त गरे, फीट उस्त-शर्म के साव र जाएँ ती उसे गुरुवीमासी का प्रायम्बिश पासा है।

३६, विभ्रमित् य शही या दिवाले या दश्चारं वा पामकां दा विश्वमार्याण्य वा विकेट्सारील् वा कार्यारं प्रमुक्तांत् वा परित्रकार्यः वा कार्यस्थ सीवित शोगादेखा, सं च निर्माणी साहर्यन्ता, सेतृत्वारितेत्वायला व्यवह वात्रमाध्या परिद्याहरणे सातृत्वारुये ।

- Single the middle

कोई मार्ची साम धनमा स्वति ने समय जन्म प्रतियान जो गई, निभी जीव-जन्म धारता नाष्ट्र धादि का मीनिस्पान दिसमें ही जाते पर गईद नेद-मोत् उदय ही जाए एमा ऐते यो की धीर इच्छा सभी रहे, बीर उस गाण्डी ने मन में रूप में मैंयन के भाव था जाने ही जो मूहकोगाली का प्राप्त-रूप धारी है।

- कें के किया राजकार कोंग्न, करने का गारणगर है है किया है। विकार केंग्न का किया किया किया किया किया किया केंग्न का कारणगर् का कार्यगर् का कार्यगर् का कार्यगर्भ कार्यगर्भ का कार्य
- देश, देवे व दर्गेन्द्रका है। वर्गेन्द्रका है। वर्गेन्द्र क्षितार्थे क्ष्य, अन्य विकार्थे विकारिता, वेदुकार्यक्षिक्षकुर्वे अन्यकुर्व काष्ट्रवर्षीय क्षितार्था

रक्षात्रण्यं । देते च प्रियम विश्वतिका विश्वयि प्रियान्तेत्र, तेते निर्माणि स्वार्थनेत्रा, सेट्रुलाविरोक्षणाचा भावणाः व्यारामाधितं प्रित्यार्थं स्वार्थनार्यं । देवी य द्वित्यतं विश्वविता निर्मानं प्रियान्त्रा, तंत्र निर्माने स्वार्थनेत्रा, सेट्रुलाविरोक्षणात्ते व्यारलात् व्यारम्मधितं प्रित्यार्थं व्यारमाद्यं, देवी य प्रियम्बं विश्वित्या निर्माने प्रतिमाहेता, तंत्रं विर्माणी साह्योजा, सेट्रुलाविरोक्षणपत्ता व्यार्थनेद्व व्यारम्भावितं प्रतिस्वर्णं व्यारमाद्यं । —ग्रह्मान्यं सूत्र थारेसेश

३१. जे म्मिग् लहुसमं फरुतं गयद, गर्गतं सा साद्याद, तं सेवमार्गः
 मावजद मासिगं पित्तिरहामां उम्मादगं।
 — निशीय सूत्र २११८॥

जो साधक जरा सी भी वाननिक हिंसा स्वयं करता है दूसरे से करवाता है भीर करने वाले को अच्छा समभता है तो उसे लघुमास का प्रायिश्चत्त आता है।

२०. जे भिरुत् लहुसमं सुसं चयइ, वयंतं वा साइजाइ, तं सेवमार्ये 'श्रावजाइ मासियं परिहारद्वागं उग्वाइयं । — निर्योथ सूत्र २।१६॥

जो साधक थोड़ा सा भी मृपावाद स्वयं वोलता है दूसरे से बुलवाता है ग्रौर इसे ग्रच्छा समभता है तो उसे लघुमास का श्रायिचत्त ग्राता है।

२१. जे भिक्त् लहुसगं श्रदत्तं श्राइयइ, श्राइयंतं वा साइजइ, तं सेवमार्गे श्रावजइ मासियं परिहारटाणं उग्वाइयं ।

— निर्शाय सूत्र २।२०॥ जो साधक सूक्ष्म चोरी—विना श्राज्ञा किसी की वस्तु ग्रहण करता है, करवाता है श्रीर ग्रहण करने वाले को ग्रच्छा समभता है तो उसे लघुमास का प्रायश्चित्त श्राता है।

२२. नो कष्पइ निग्गंथाण वा निग्गन्थीण वा वेरज-विरुद्ध-रजांसि सज्जं

े बारते बारामणी कारणे संस्थानारामणी स्वेत्र स्वतंत्र क्षा कार्यण्ये, हे तृहक्षी न्द्रशास्त्री कार्यकृत् वाल्यस्त्रीत्रय वृत्तित्राह्यस्त्रीयः वाल्यकृत्युत्

अहीं मोर्ट शाय-मायस्या न हो (धरात्वामा स्थान हो) आ साम में गृहन्त्र बार रहा हो, भिन्न देशों के होते जिल्ला अधिकारी म लीने में माप माली भी पत्री कामान्याना मही पहला। यदि गीर्ट सामक एते देशों में प्राप्त-लाग है भीर की शहरा समस्ता है हो यह महत्त्वह ग्रीप महत्त्वहार क्षेत्री पश्ची के क्षेत्री का केवन हराता है भीर हते हुन बीकारी ना प्राचित्रमा घाता है।

१३. रिक्ट्र व समाविकारण स्ट्रांकीलय स्टेक्स्ये संस्थित विकास हिल्ली कारण का बार्ण मा बार्ण मा कार्य मा कार्य मा विकासिया कारणमा अर्थिमानी बाद गर्मा व्यानेता क्यांत्रामा स्थित स्थानित मा, से में य अपूर्व के सा प्रार्थित के सा प्रतिकारित है कि विकास माने देवती है करते हैं करते हैं of the state of th - The state भीतिमान्त्रे कार्यास्त्रेत्रं ।

सार्थ के विश्वास क्षेत्री है कि यह क्षेत्रिय है दुई सूर्य THE REAL PROPERTY AND ASSESSED AND ASSESSED. त्रकृता सम्पर्ध है, त्रीत स्वान्त्र हे राजना स्वान्त्र में न्यून स्वान्त्र के वहीं, क्षेत्रों में क्षेत्रातारों कर कर किया, किया क्रिकेट क्रांस्त्र संबंध क्रांस्त्र क्रिकेट क्रांस्त्र क्रांस्त्र क्रिकेट क्रांस्त्र क्रांस्त्र THE FERNISH TO THEFT PRINTS WILL THE the feet strat fly state he was go an water min at THE REAL PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE PAR  सापण कार्यन्योत को माला का पातिम नशिवरता सर्वी उसे राजि-भोजन का वोर्व तीय नथे अगता। यदि वह सर्वे उस पाहार को करता है यथता विसो मन्य को देशा है सो उसे ग्रु-नोमासो का पायदिनस पाता है।

२९. भिन्त् य तमान-विनीम् यानाणिम संक्षे संशित्ति विदे गिन्द्रासमायन्ते व्ययमं ता ४ परिमाहिता वातासमात्रस्माणे वह पद्ध जागेजा—पणुमाप् स्रिष् वाणिम् मा, से जं च मुहे, जं च पाणिमि, जं च परिमाहे, तं विगित्रमाणे वियोहेमाणे नाइक्कमहः, तं वालाणा भुशमार्षे सन्तेसिं वा वाणुष्यदेमाणे सावज्ञह् चाउम्मासियं परिहारहाणं वाणुष्याह्यं।

— वृहत्कत्प सूत्र पाणी

भिक्षु का संकल्प है कि मूर्योदय से पूर्व तथा सूर्यास्त के परचात् वह आहार न करेगा। साघक, शरीर से कष्ट सहन करने में समर्थ है परन्तु धूल ग्रादि से व मेघाच्छन्न ग्राकाश होने के कारण उसके मन में तिद्वपयक सन्देह है, किसी ग्रन्य से पूछा, उसके कहने पर विश्वास करके ग्राहार ग्रहण कर लिया ग्रीर उसे करने लगे, तव उस समय साघक को मेघ ग्रादि के हट जाने से ज्ञात हुग्रा कि ग्रभी तो सूर्योदय नहीं हुग्रा ग्रथवा सूर्य ग्रस्त हो चुका है। उस समय यदि वह साघक मुख में डाला ग्राहार वाहिर निकाल दे, हाथ में लिया हुग्रा छोड़ दे ग्रीर पात्र में पड़ा परठ दे, तो उस साघक को रात्रिभोजन का कोई दोप नहीं लगता। किन्तु यदि वह साघक उस समय ग्राहार करता जाता है (कि दोष तो लग ही चुका, ग्राहार कर ही लें) ग्रथवा दूसरे किसी महाव्रती को देवे तो उसे गुरु-चौमासी का प्रायश्चित्त ग्राता है।

२५. भिक्लू य उग्गयवित्तीष् श्रण्त्यमियसंकष्पे श्रसंयडिए निव्विड्गिच्छे श्रसणं वा ४ पडिग्गाहेत्ता श्राहारमाहारेमाणे श्रह पच्छा क्रेन्ट्रेंग्स - ब्रायुमाए सुनिए बागरिया था, में सं व सुने, सं य वार्रिनीय हा व र्यांचारे, में विविध्यमणें, विविध्यमणे साइम्हमाई, में प्राप्ता श्रेलापे कालेबि का काणुपार्दमानी काकार कालकारिक वरिताहरण कालुवासूर्य श --- पुराचात्रक सुद्ध भारती

मूर्गीयम के परचात् एवं पूर्णात्य के दूर्व प्राह्मर एउने की प्रतिका याला नामक, राग के नार्य समया मार्ग धल्येन मेवा गारने बादि में भरीर में बनमपे हैं परन्तु बाहार सेने समय मूर्वीदय एवं सूर्णांका विषयक समे ने कोई सन्देह मही। पालुक में लिया। हो मन्त्रे लगे। पालुक एकी संगय धन में निस्त्रय हुआ कि मृत्रीयम मही हुआ सम्या मूर्किन्य है। भूका ्रि उस समय गत्साम यदि यह सामन मृह में हाला छल्छ केहिर निकास है। हाम का प्रतार कीई दे और पात की म्नामूबंक मरिकारेन करदे हो उसे शिक्सीकन का पोई द्रोप नहीं समाना, जने पोर्ड प्रायम्बन नहीं प्राप्त किन्तु बन में मूर्वोद्या कृतं मुर्योक्त विश्वक विश्वक होते पर भी करि नह माध्य (दोष सं त्या हो गया, मानार बेप्टा वर्ष होता लागु शामादि विवासी के) बाह्यन नात्रा लागु संगत्र बन्ध की कार्ल्डर में महत्वे किसी हुनी सहस्का को देवे की हों। मुक्कीमार्गी का आविका बाग है।

१६, विस्तु व अवस्थितीय सम्पर्धानमध्ये समयशिक्ष दिया रिष्यापुराहामानगरि भागमा माच परिमार्गनेक कानगर रेमार्ग भाग कर्ण عيد المارية الم المراوسية أن والرياسة مسي وهدر بالاسترا عدمهمه ماها له علماستم عأميد المال عدور ع يس بالمنطق في المنابع هند المناسلة على المناسلة المناسلة المنا المناسلة الم

२७. इट सन् ानमागरम वा नियंतीए या शको या विशाने मैं समाणे मभोगणे उपगाने श्रामन्देश्ता, सं विभिन्तमाणे विमोहेमाणे बाह्यकमद्दः सं उपमित्रिम पर्त्योगितमाणे सहभोगणपियोगणपते श्राप्तमह बाउममानियं पितारहाणं श्रमुखाइगे॥ —यृहत्कल्प सूत्र ५१३०॥

किसी सायक को सूर्यास्त के परनींत् उम्माल आजाए तो वह बाहिर थूक दे तो कोई प्रायश्चित्त नहीं आता किन्तु यदि वह अन्दर ही निग्गल जाए तो उसे राविभोजन का दोष लगता है और उसे गुरुचीमासी का प्रायश्चित्त आता है।।

२८. तण्णं ते बहवे णिमांथा य णिमांथीश्रो य समग्रहस भगवश्रो महाबीरस्स श्रंतिण एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, समग्रं भगवं महाबीरं वंदर् नमंसद्द २ तस्स ठाण्ह्स श्रालोयंति पदिश्वमंति जाव श्रहारिहं पायन्छितं तबोकमं पडिवज्जंति ॥ —दशाश्रतस्कन्य सूत्र २०१५६॥ तय बहुत में साथु साहवी, श्रमण भगवान् महावीर स्थामी मुसार्गिन्द में नियानों का गुपल गुन केर नेयनील एक, वान् को बन्दना नमस्कार की छोट राजा म्हेलिक छोर लगा रानी को देश कर हो नियम निया था इक्ही धाली-ना निष्दना मी प्रीर प्रतिक्रमण किया, मावत् उमना क्षेत्रीयत त्मित्वत स्थानमं घर्तामाम् विमा ॥

इस प्रकार विशिष्ट विषय, कृषाय, विद्या, विक्या कीर मह रुप प्रमाद्ध के कारण मृत्रगुणियम् वारिमाचार के द्वीरों के अयोज्यत समक्त कि चाहित्र बोर गाःच प्रवार के विसिद्ध क्षमाद के कारण उत्परमुगसम्बन्धी स्वतिनामार हे क्षाप्रीत्याची ्रा गर्दन इस प्रनाह है—

े १ ने विकाद मिनियों सिर्ट मुंग्यर मुंग्यें या सामूच्या, में किलामी बावायह े क्ष्मित वहिंद्यपूर्ण जनगाद्य प

जी साहत प्रसादी धन नार गरिन्दिन एक ही घर के बाहार क्षा है, मंगवाता है सीर साथ गर्भ की संस्था सम्भाग है तो की लगमात का प्राथमित वाता है।।

a in There have not not not been a south to मान्यत् मान्यत् स्वयंत्रकाम व्याप्ति ।

की सहयम महागणाच्या प्राप्तिकाम्नाम् का रिन्ह विदेशाः which the man't have many by which wants of his way had AND THE RESERVE THE PARTY OF TH mentante y net mas automora and arrigoment execute ; et

<sup>·</sup> 智性 等學性 是 新田林 學問表 是 一种 居代 为是 五 人名 Carried Address of the Line of the Con-

११. जे भितन्तू परं चीभावेड, चीभावंतं वा साङ्काउ; जे भि विकाषेड्, विकाषंतं या साइउज्ज्ञ, तं सेनमामे पानाज्ञड, नाङ परिहारहागां ऋणुम्बाह्यं ॥

जो साघक दूसरों को भय दिलाता है एवं उन्हें विस्म डालता है श्रीर इसे श्रच्छा समभता है तो उसे गुरुचीमासी प्रायश्चित्त ग्राता है ॥

१२. जे भिक्त् गिहि-मत्ते भुंजह, भुंजतं वा साहज्जह, तं सेव श्रावज्जह चाउम्मासियं परिहारद्वाग् उग्वाह्यं॥ — निर्शाय सूत्र १२।

जो साधक गृहस्य के पात्र में श्राहार करता है ग्रीर क वाले को श्रन्छा समभता है तो उसे लघुनौमासी का प्रायश्चि श्राता है॥

१३. जे भिक्ख् श्रम्नउत्थिएगा वा गारत्थिएगा वा उवहिं वहावेड . वहावंतं वा साइउजइ, तं सेवमार्गे श्रावउजइ चाउम्मासियं परिहारद्वार्गं उग्वाइपं

जो साधक अन्यतीर्थी तथा गृहस्य को अपना सामान उठवाता है और उठवाने वालों को ग्रच्छा समभता है तो उसे लघुचौमासी का प्रायश्चित ग्राता है।।

१४. जे भिनख् महानईस्रो उहिंद्वास्रो गिएयास्रो विजयास्रो स्रंती मासस्स दुवखुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरह वा संतरह वा, उत्तरंतं वा संतरंतं वा साइजाइ, तं जहा-गंगा, जउगा, सरऊ, प्रावई, मही; तं सेवमाणे श्रावज्ञह् चाउम्मासियं परिहारद्वाग् उग्वाह्यं ॥

जो साधक एक मास के अन्दर दो वार वड़ी नदियों में — निराीथ सूत्र १२१४१॥ उतरे एवं उन्हें पार करे और ऐसा करने वाले को अच्छा समभे तो उसे लघुचौमासी का प्रायश्चित्त श्राता है।।

१५. हे शिक्ष बहुत स्टब्स हेल्ट. हेल्प वा स्टब्स्ट व रेप्याने को सायक सीने में ब्राना मृत आना है सोर हो सहात जामता है तो जो नप्त्रीमार्ग है। प्रायोग्यन दःग है।

किंद भेतर, भूति या बाह्यहै, य संस्थाते कारणहे वाराव्याक्ति प्रतिस्थाते Think the 13130,000 grangit 11

की सामक विधा सिमा कर क्या मन्त्र क्यान स्थान लगा है और महन करने यान हो प्रत्य समस्ता है ती उस

عمر يم المعسو المسمد والمسالة وسريام عزور عبد وروسي و त्मुनीमानी का प्रायीक्तिन द्वाला है।।

Their the Call of क्षिताली कालगढ् कालमार्गतंतं व्हिक्तहुन्तं द्रायक्ष्यं ॥

जी स्मापक स्माने वाली की उस विकास स्मान है हार के प्रतान है। सम् देशा मूक्त साला गो स्वयंता सम्बद्धा है तो यह क्यून क्यांत

31 B. Echil Mily spring the state of the st का यामस्तित्व स्थाना है ॥ But the first the state of the form the same as a

Same to the state of the same of the same

THE STREET STREET, STR The same of the sa The state of the s Shakey at altaly and garden of a

जो सापक यन्यतीयिक यथना गृहस्थ से अपने पाँच साफ करवाता है तथा, उन से दयनाता है और ऐसा करवाने नाले अन्य सामकों को अच्छा समभता है तो उसे लघुनीमासी का प्रायदिचत्त श्राता है।।

२१. जे भिमन् श्रमजिक्षण्य वा गारिक्षण्य वा श्रन्यमो कार्यस गंधं वा श्ररह्यं वा श्रित्यं वा भगंदलं वा श्रत्यरेगं तिम्त्रेगं सरधजाएगं श्रान्यं देज वा विन्छिदेज वा, श्रान्यंदिना विन्छिदिता पूर्व वा सोणियं वा नीहरेज्य वा विसिद्धेज वा, नीहरिता विसोहेक्ता सांश्रोदम-विषटेण वा उसिणोदम-विषडेण वा उन्छोलेक्त वा प्योण्ज वा, उन्छोलिता प्योहता श्रम्नयरेगं शालेवण-जाएणं श्रालिपेज्ज वा विलिपेज्ज वा श्राकिपिता विलिपिता तेल्लेण वा, प्रव्या वा, वसाए वा, नवणीएण वा, श्रम्भट्नेज्ज वा मक्येज्ज वा, श्रव्मित्ति मिल्वता श्रम्नयरेण ध्वण-जाएणं ध्वज्ज वा पश्चेज्ज वा, एवं करंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे श्रावज्जइ चाउम्मासियं परिहारहाणं जन्याइयं।।

नी गायक, धन्मतीचिक अवया गृहाय में पाने घटीर में ज गृम्बह, भेद, पुत्री, मरसा=हमें, अगंदर, (मीसमानियार्ड) हे की किसी तीक्षण शहन में एक बार छेवारे समयो राजार छेदावे, एक चार अभवा चारापार रिप्रमा पर उन । पीत रक्तादि निकल्या कर विशुद्ध करावे, विशुद्ध करावर णित प्रथम श्रीवरा मत हारा एतः गार पुत्रमाण प्रथम तरम्यार गृतवाए, फिर मल्लम लगमाए, गारम्यार शतकाए, जमी इसमें में अस्महान मर्चन सहनाए, चीर जी एक गार मा दिलवाए भगवा भारच्यार मुन दिलवाए, दम् प्रवाह हो। कोई सामक करपाता है धीर उमें घन्या सम्भाति है हो। जी सपुर्वोगासी का प्रायक्तित साला है।।

 के विसम् जामगान्यचे मा निर्मेशकान्यचे मा शहरीत्व सर्वान्त्व कार्यक्रिय परिमार्थेद, परिमार्थेन या माहरू है है। माहे चार्यमान्त्रमें परिवारद्वार्थं सम्बाद्धं । से प्र सन्ते धवार्थं समापे विषयः े से कहा - विकासिकारिया, सामीतिक, स्थारिका, साम पूर्विया

की महत्वक समये की बहलता के बहुत रहवार पह की है। राणा के भाग की विसा जाने जिसी गुरिशिया मोज कि तरिक गरे भागम भारते भा भी सही. जिल्ही हैंगरेल द्वारत पर में कारत है भारत स्थापन स् श्री करी-पूर्ण गाला काला है सीत करण संगति हैंग की बारण े भारतामा है और गर्न समूचीमानी मार्ची है व बाला है अ

The there was and the second the There and the house it is the state of the s months of the 24 2 4 11

जो साधक प्रमाद में पड़ा रह कर, आरा-पास अन्यतीर्थी एवं गृहस्यों के आने-जाने के स्थान में आहार-पानी करता है और ऐसे स्थान पर ब्राहार-पानी करने वाले को ब्रच्छा समभता है तो उसे लघुचीमासी का प्रायश्चित्त आता है।।

२४. जे भित्रस् श्रसर्णं वा पार्यं वा खाइमं वा साइमं वा उसिणुसिणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गहंतं वा साइजङ्, तं सेवमाग्रे श्रावजङ् चाउम्मासियं परिहारद्वार्ण उग्घाइयं ॥ —निशीय सूत्र १७।१३१॥

जो साधक, अत्युष्ण से भी अधिक गरमागरम आहार-पानी ग्रहण करता है, स्रीर इसे श्रच्छा समभता है तो उसे लघुचीमासी का प्रायश्चित्त श्राता है।।

२५. जे भिक्त् सागास्यि-पिंडं गिराहड्; गिराहंतं वा साइज्जड्, तं सेवमार्गे श्रावज्जइ मासियं परिहारद्वार्गं उग्वाइयं ॥

—निशीथ सूत्र २।३६॥

जो साधक शय्यातर का ग्राहार ग्रहण करता है ग्रयवा ग्रहण करने को कहता है या इसे अच्छा समभता है तो उसे लघुमास का प्रायश्चित्त ग्राता है।।

२६. नो कप्पड् निम्गंथाण वा निम्गंथीण वा सागारिय-पिंडं बहिया नीहर्ड श्रसंसट्टं संसट्टं करेत्तए । जे खलु निगांथे वा निगांथी वा सागारियपिंडं विहया नीहर्ड श्रसंसट्टं संसट्टं करेड् करेंतं वा साइजइ, से दुहश्रो वीइक्कम-मार्गे श्रावज्ञङ् चाउम्मासियं परिहारद्वार्गं श्रणुग्वाङ्यं ॥

—वृहत्कल्प सूत्र २।१८॥

शय्यातर के घर के श्राहार में से वाहिर निकाला हुश्रा ग्रंश जो कि ग्रभी तक दूसरे के श्रिवकार में नहीं हुआ ग्रीर उसके ग्राहार में नहीं मिला लिया गया, तो वह शय्यातर के श्राहार का ग्रंश साधु-साघ्वी को ग्रहण करना नहीं कल्पता।

प्रामुनाच्यो उसे ग्रहण करने के लिये उमें ग्रह को स्थम कराने, श्रीर साधु-मान्यों को देने ने निधित स्थम करने बाद की श्रन्था नमके (साधु-मार्च्या-किमध्या ने की श्राह्म, की प्रहण करें) तो यह तीर्धकर देव श्रीर दिस देनों की श्रामा का उन्ताहन करता है और उसे जीकांस का श्रायाञ्चित श्राता है।।

३३. मो बायद् निर्माशमा ना निर्माशमा मा, समर्ग हा, पार्श सा, प्राप्त वेपधि ।
इस का बादमं वा पदमाप् पीजनीष्ट्र पित्रमानेता परिष्कं वेपधि ।
पूरापेत्रम् में म बाहम उपादणायित्र निर्मा, ने में बादमा भेतिया ।
कार्यस बागुमहेत्रम्, समेरे बाहमसूद ग्रेडिन विटिनेत्रम सम्भित्रम ।
कार्यस बागुमहेत्रम्, समेरे बाहमसूद ग्रेडिन वा बागुमहेत्रमो कार्याद ।
किनेत्रमे निरम्भ में मन्याना भेतामार्थ, स्थानिक मा बागुमहेत्रमो कार्याद ।
विद्यानीय परित्रमहास सम्भाव ।

नापत, प्रथम प्रमूप का निया हुआ बाहार कर्ष प्रहार मे म रोड, यदि का जाए तो उने म न्या काए कोर म दिनी। भाग गायक को काने के नियं देश व्यक्ति एकान्य प्रमूत नगान को केव का साम करते. यहनपूर्वक उन काराव को प्रकार केव को केव का साम करते. यहनपूर्वक उन काराव के प्रयोग भाग की कोद कह गायक उस बाहार को क्यम काराव है स

कर, की कारण विकासकार का विकासिक का, कारण का, कारण का कारण व्याहर का कारण विकासिक का कारणीयारिक वा कारणीया कारणीया कारणीया समझकारिक विकास में की कारणीया क्रिकार की कारणीय कारणीया कारणीया स्वाहरूप क्रीके चित्रिकिता कारणीया क्रिकार कारणीय कारणीया कारणीया भागाने, कारणीय का कारणीयाने कारणीय कारणीया कारणीया कारणीया कारणीया कारणीया कारणीय कारणीय का कारणीयाने कारणीया कारणीय कारणीया कारणीया कारणीया कारणीया कारणीया कारणीया कारणीया कारणीया

स्तात्व के स्वतंत्रक मान्त्राहर अने स्वतंत्र प्रताल है क्षेत्र प्रताल स्वतंत्र के त्र

श्रवस्था की श्रशक्तता के कारण उसे तप प्रायश्चित न देकर छेद-प्रायश्चित दिया गया, ये बदल के प्रायश्चित हुए। किसी प्रायश्चित का बदल न होकर छेद प्रायश्चित उसे श्राता है जो विना कारण श्रपवाद-मार्ग का श्रासेवन करता है॥

उत्सर्ग-मार्ग श्रीर श्रपवाद-मार्ग का क्या वास्तविक स्वरूप है? श्रीर इस के किस प्रकार प्रायश्चित्त होते हैं ? ये सब बातें इस प्रकार जाननी चाहियें—

उत्सर्ग का श्रयं है—'उत्सृज्य विशेष-प्रसङ्गान् यः सामान्य-नियमः स उत्सर्गः।' हीनतर तथा उच्चतर विशेषप्रसङ्गों को छोड़कर जो सामान्य विधि होती है उसे उत्सर्ग-मार्ग कहते हैं श्रीर जो श्रसामान्य श्रवस्था में श्राचरण किया जाए उसे श्रपवाद-मार्ग कहते हैं।

## उच्चतर विशेषप्रसङ्गों के ग्रपवाद--

- (१) वेश्या के सानिष्य में वास नहीं करना द्र यह उत्सर्ग-मार्ग है, किन्तु स्थूलभद्र जी महाराज ने वेश्या के घर चातुर्मास किया। उन की श्रात्मा विशेष वलवान थी इस लिये यह श्रपवाद-रूप था।
- (२) कोई साघक सहसा वारहवीं पिडमा घारण नहीं करता यह सामान्य नियम उत्सर्ग-विधि है परन्तु श्री गजसुकुमार जी महाराज ने दीक्षा लेते ही वारहवीं पिडमा का वाहन किया श्रीर श्रपने लक्ष्य की प्राप्ति की। उन में विशिष्ट श्रात्मशक्ति होने के कारण यह श्रपवाद-विधि थी।

ः सत्र प्राशह॥

न चरेज्ज वेष-षामंते, वंभचेरवसासुपः ।
 वंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तस्य विकेतिन्त्राः ॥

(३) प्रनावं शेत्र में विहार नहीं करना यह उत्तनं मानं परमा अन्याम का न परमा प्राप्त क्षेत्र में विहार किया भी सामु विकास सावन के लिये प्रताय क्षेत्र में विहार किया भी

(४) मही के तीर पर प्रामुक जल भी नहीं पिया जाता: केर हैं तो कि अपनाद रूप है। १

क्रिक्त करने पानी की श्राणंका का व्यवहार ही जाता है।

(४) जंग्ड मातार की तीय उठनता में राजि को निस्ते (४) जंग्रह भागाव की तीय जरूनता म राजि कारह ही ति प्रति महासती सामक बारह ही ति क्षेत्र प्राप्त नम्म ही जाती है परन्तु महासती समय भ्रमने हारीर की क्षेत्र को छाया है बाहिर झाते समय प्रपने शरीर को

(१) सापत मीवत जल मा संपष्टत नहीं करता यह ा अवस्य स्वयं मार्ग मार्ग पर गुटनो से नीने स्वरंगारं १ परण स्वयं मार्ग न होने पर गुटनो से नीने

िरम निर्माणाच्या मा निर्माणीच्या मा प्रतिष्ठीच्या आव स्त्रेगामा-

कि हेम्स क्षित्रकृते जीते क्षित्रकृति प्रतित्व प्रतित्व क्षित्रकृति जीते क्षित्रकृति व्यति क्षित्रकृति जीते क्ष क्षित्र कार्या स्थाने जात कुलाल विषयाची तथत । स्थानात -16.44 th shall

करते देशकात स्मिति होती की के मन्त्र एको साहि हिस्स पहें स्थान करते होता असे क्षेत्रकात स्थान के स्थान

र भ क्या किलेगाएँ या निर्माक्षित् या द्यानीकी निर्देश्य - मिलिन्स्मिन्द्रियार् उत्तासीत ॥

के देवतेक की वेद्धिया थी। विद्यम्ति थी। विद्यम्ति हो। विद्यम्ति विद्यम् करेत हो त्रांत का कारण जा भारत था काराक्षाताहरूल करणा जन्म जन्म जन्म जन्म जा कारण जा काराक्षाताहरूल व्हार हो। कर्मा हो होते थी। स्थाद या स्प्रदृश्यत् । संस्थित संस्थित सामान सामान

-\*\*\*\*\* TT 11:EII AND SECURE AND SECURE

The same wife was the same of And the subsection and the same and the same

- ं (३) धनायं क्षेत्र में विहार नहीं करना यह उत्सर्ग-मार्ग १ परनु विरोप साधन के लिये धनायं क्षेत्र में विहार विषा भी खारा है जो कि धनवाद-रूप है। १
- ं (४) नदी के सीर पर श्रासुक उप भी नहीं विया जाता; वर्षीकि कर्यने पानी की झार्यका का स्ववहार ही जाता है।\*
- (४) क्येंग्ड पाताल की तीय उत्तरता में राति की निर्देश नामी पोम भरम ही जाती है परन्तु महावर्ती माएक बारह ही महीने राति को हाथा में याहिए जाने समय पर्यन धारीर की जीवता है।

हीनतर प्रमञ्जी के प्रस्वाद ?-

(१) मापक सचिन अस का संपट्टन महि करणा ग्रह उत्तर्मन्त्रामें है गरन्यु सत्य मार्थ म होने पर गुट्टी ने गीर्थ

के. भीर काल्य विश्वनिकास का निर्माणीन्त्र का दार मोदिन विश्वनिकाल का, निर्माणिन का दार मोदिन विश्वनिकाल का, निर्माणिन का, पर नाइकार का, व्यवनाइकार का, विश्वनिकार का क्षित्रिकार, कान्याप्त का क्ष्मित्र, व्यवनाइकार का क्ष्मित्र,

咖啡物 我問 我等 利押支付

है, अस्तर मार्ग किर्देशहर एक्सरें हाराण कार्यरिय क्रिक्सिक स्थानस्थित स्थानस्थ है। स्थानस्थानस्थानस्थानस्थ स्थानस्थ स्थानस्थ स्थानस्थ स्थानस्थ स्थानस्थ स्थानस्थ स्थानस्थ स्थानस्थ

- (११) जिस उपाश्रय में राजि-भर ज्योति जलती रहे उस उपाश्रय में साधक नहीं ठहरा करते परन्तु अन्य स्थान उपलब्ध न होने पर एक दो राजि पर्यन्त उस स्थान में ठहरा जा सकता है। १
- (१२) साधक गृहस्य के रहने के मकान में श्रत्पकाल भी न ठहरे परन्तु वृद्धत्व, रोग श्रीर तपस्या के कारण ठहर सकता है।  $^3$
- (१३) सावक गोचरी को जाते समय लघुशङ्कादि से युक्त न हो, यदि रास्ते में वाचा हो ही जाए तो स्थान के स्वामी की श्राज्ञा लेकर प्रास्तृक स्थान देख कर निवृत्त हो सकता है। उसहाय वा वाला वा वाहाए गहाय रायंतेउरमण्पविसेष्जा ४, विशा वर्ण श्रारामगयं वा उष्जाण्गयं वा रायंतेउरजणी सच्चश्रोसमंता संपरि- विखिवताणं निविसेष्जा ५, इच्चेहिं पंचिहें ठाणेहिं समणे निगांथे रायंतेउरमण्पविसमाणे नाइकमइ॥

--ठाणांग सूत्र पाराशाः

- उवस्सयस्य श्रंतोवगडाए सन्वराइए जोई भिन्याएउजा, नो कप्पइ निन्गंथाण वा णिग्गंधीण वा श्रहालन्दमिव वस्थए। हुरस्था य उवस्सयं पिंडलेहमार्णे नो लभेउजा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वस्थए॥
  --वृहस्कल्प सूत्र २।६॥
  - तिपहमन्नयरागस्य, निसिजा जस्य कप्पइ।
     जराए श्रिमिम्श्रस्य, वाहिश्रस्य तवस्सिगो॥

--दशवैकालिक सूत्र ६।६०॥

गोश्ररगापविद्धो श्र, वच्चमुत्तं न धारए।
 श्रोगासं फासुश्रं नचा, श्रगुञ्जविय वोसिरे॥

-दशवैकालिक सूत्र प्राशाश्हा

- (१४) महावती साधक निका ला कर घनने उराध्य में प्रिति हैं परन्तु कोई वृद्ध, रोगी घोर तपस्वी धरर् घाटि राष्ट्र में, रयान के स्वामी की घाडा लेकर पहीं भी नुका धरता है।'
- (१४) मापक लोग एक बार भिधा लाकर उसी समय इयरी बार नहीं जाया करते, परन्तु लाए गए घाहार द्वारा भिभंद न होने पर यदि किसी ने धूपा महन नहीं होती हो हो इसरी बार भी जा सकता है।
- ् (१६) याम गागे न होने पर विषय-मार्ग में भारते यदि पीत विवास काण् को दहनों पादि का प्रवस्थान ने प्रकार है।\*

  - ५. (म.) विकास निवर्त विकास, वार्यावारी का सीमित व कामन्यवार क्यान्त्र, यह तेल् म कार्य का सम्बोध काव्यक्तमन्त्रात्त्रे, अन्तराल्, कोर्यान्त्र व विविद्याः कुम्बर्गरील, क्षीणी जुन्नीय का का

如此我们是有野门和 野坡 慢性不停度性

- (१९) निर्माणित स सार्थनप्र-पुत्री विकाससम्बद्धाः सम्माणिविकाय स्थानम्बद्धाः पुत्रस्य के विकासम्बद्धाः के मध्य भाव के भागोव्यकः, साद के स्वापक निर्माणक असंबद्धाः विकासियद्धाः का वार्षे मंत्रीः, साद के सावकः चीपन्य विकासम्बद्धाः सावकः यह प्रास्तिः यह विकास स्वतः व्यक्ति स्वापः स्वतः ।
  - इ. के किन्स्ट्रें के विकासिक यह सामग्रीहरण हुइसम्मार्थ प्राप्टर

(१९) नवमें तथा दशवें प्रायश्चित वाने की गृहस्यों बना के नंदें दोशा दी जाती है किन्तु विद्येषायस्या में क्या की क्योंति के निये विना गृहस्थी बनाए भी नई दीक्षा देकर नवमां क्या दशवों प्रायश्चित है दिया जाता है।

(२०) सामजीनिक होने पर भी साधु साध्यो एक इसरे है शेटह प्रशास की वैयावृत्य नहीं करवा सकते, किन्तु कोई रैगावृत्य करने यामा न ही तो करवा भी सकते हैं।

े इस प्रतार व्यवहार मूत्र २।६मे१७ में रोग के सारण, पुरुषत्व मूत्र ४।१८से२० में धर्मेदिनय का साम घोर व्यवहार पुरुषत्व में धक्या की पुलेमता तथा कृतवहार ४।२६

रे. काणुरहाप निवानुं स्वतिरिभूतं को कारह सम्बन्धानिकान् केरोहसास अवहारिकान् । नागवहार्य किलानुं विरिध्नं घणाह सम्बन्धानिकान् । मानविर्देशसास स्ववहारिकान् ।

पर्यनिषं विवर्षः क्रिविद्युतं को मानद्र सम्म मानावस्तेह्दसम् साम्राधिनम् १ पर्यनिषं विवर्षः विवरम् कानद्र सम्म मानावस्तेहस्यम् साम्राधिनम् १

कार्यक्षा है लिक्तुं कार्विरिश्त वह विविध्नते यह कांग्रह एक्त समावतः विदेशका प्रवाहतिकायः, यहा तका सहस्य विविध् विद्या ।

पार्थिक विकास सम्बद्धिकार, साहिताहर्ष कर विस्तिताहर्ष कर बारण सम्बद्ध सम्बद्ध स्थापन सम्बद्ध स्थापन

ए. जे दिश्मीता क दिश्यतिका च मृतिहरू देश्यक द्वार्थक मा अप अध्यक्ष अध्यक्षिति विदायको अवश्वीता ६ व्यार्थक अप अप जे केंद्र विद्यवस्थ्यतिकृ सर्वे वर्ष अवश्वीति विद्यवस्थित विद्यवस्थित अवश्वीतात् है।

कुण्या), विस्तित कोषा का त्या पापत्तिक क्षा त्रित्र साम्रोटिका देशक को स्वाम के स्वाम्यापन करें म

इसी पातर गण को तील कर काई साम्यणालाही विहारी, प्रतील-विहारी, प्रतासत-विहारी तथा सरात-विहारी हो जाए पोर वह पुनः गण्ड में पाना भाते, यदि उस में गंगम-पालन के भाव प्राधित हों तो उसे पालोगना, प्रतिवसण, तप श्रीर दीक्षा-देह के प्रायम्भित हारा भूग करके संगम में उपप्रस्थापन करना चाहिंगे।।

अत्यान् य चित्रमरणं कर्द्र, तं चित्रमरणं चित्रमित्रोतः, इत्तेत्रा चन्तं मणं उत्यानिकालं चित्रमित्।, कल्प्रः सहय प्रत्न-राईविषाइं धेर्यं कर्द्द्र परिणिज्यानिय २ तमेत्र गणं पितिजाणगणे सिया, जहा स तस्स गणस्स पत्तियं सिया ॥ — मृहस्कृत्य सूत्र पापा

कोई सावक क्लेश भगड़ा करके श्रीर उस क्लेश को उपशान्त किये विना अन्य संघाट्टक में मिलना चाहे, तो उसे पाञ्च दिन के दीक्षा-छेद का प्रायश्चित्त देकर अपने पास रखना कल्पता है। इस प्रकार रख कर किर उचितावसर पर कोमल वचनों द्वारा उसे समभा-चुभा कर वापिस उसी संघाटक में मिला देना चाहिये जहां से वह श्राया था जिससे गच्छ में प्रतीति वनी रहे।।

८. से गामंसि वा, नगरंसि वा, निगमंसि वा, रायहाणिंसि वा एगवगडाए, एगदुवाराए, एगनिक्खमणपवेसाए, नो कप्पइ बहुणं श्रगडसुवाणं एगवत्रो वत्थए। श्रिथ या-इ गर्ह केइ श्रायार-पकप्प-धरे, नित्य गर्ह केइ छेए वा परिहारे वा; नित्य या-इ गर्ह केइ श्रायार-पकप्प-धरे से सन्तरा छेए वा परिहारे वा।

में गामीन भा ताप शानानित मा कार्नित-साप्ता, क्रावित मुख्याण, दिन निकासमा स्टेस्सणाह, सी कामह बहुले कामह स्थानने स्थानी से स्थान है िय सान्यु कार्य क्षेत्र कार्यात-स्थल्य-परे, क्षित्र अर्थ में सू क्षेत्र का परिवार परे ित सान्त्र महि महामार-प्रथमात्रवरि, के स्त्रीति क्लील स्थाप्य स्थिति - STATES ALL SINGS

होटे प्राम् में, नगर में, यह नगर में झीर पत्थानी में हैंने संपतिनं हैंगू का परित्रों का प लेता मुकान हो दिसाला एक हो गड़ा क्मारा हो, बुक ही जार में सार बान जाने का भी हता ही सान ही, एक स्थान है शहन में सापनी हो, से कि सानारोग, सुनारोग, निर्दाप साहित्यों के पडे हुए गरी, एक प्रता केले कर्नात. यह लगा की मामक, मानागंत विक्ति हैं है। यह हैं है भी देने की देन में समादित्या नहीं देनते किया गरि क्षेत्र सामाना विशोध का वर्ग हमा बाँ की मार् करें हैं की दिला के दिन की दिन का दूरी हैं हैं है है है है है है है है नामित्र का मा मार्गाल्या याणाहै ॥

reft mark und munkle, und alle eine eine eine इत्तरम् सं स्वातं सं प्रति हैं हैं स्वापं से सहस्य करे हैं। THE STREET STREET STREET STREET STREET STREET THE RESERVENCE OF THE PERSON AND THE

I Brown a destroy and strain of the white file many the street of the secretary was the street of the Extens, make the wind arms of the same of the said the grown of thinking to get the distribution to the standing to 

िधी मागक को, कुल मानका को माण लकर, महाधी-पित कर किन्या करने की उल्हा कुई से भी स्वीर भग पत् के विना पूरे उसे ऐसा करना नांग कराता, एरे पीर कर, योर के मागाक्षण कर जिन्या करने की अभाग पूर्वक यामा प्रान कर दें, की अभे गणपारण कर जिन्या करना कलाता है; यदि स्वित्र भगवान् यामा न दें हैं, तो गणपारण कर जिन्या करना नहीं कलाता, यदि वह सावक स्वार्थि की सामा जिना गणपारण करके जिन्या करे तो उसे उतने ही दिन का योधा-चेद या पारिहास्क तप का पायदिनत्त याता है।।

३०. वद्ये सातम्मिया इन्द्रेजा एमपयो श्रीमत-नामि वारए; सो गर्ड, कल्पड् धेरे श्रमापुन्दिता एमपयो श्रीमत-नामि नाम्प, कल्पड् गर्ह धेरे सापुन्दिता एमपयो श्रीमत-नास्यं नाम्प,। धेरा य से विपरेजा, एवं गर्ड कल्पड् एमपयो श्रीमत-नास्यं नाम्प, धेरा य से नो नियरेजा, एवं गर्ड नो कल्पड् एमपयो श्रीमत-नास्यं नाम्प, धेरा य से नो नियरेजा, एवं गर्ड नो कल्पड् एमपयो श्रीमतानास्यं नाम्प,। जे तल्प थेरेहि श्रीमहम्मो एमप्रश्री श्रीमतान्वास्यं वर्गत, से सन्तरा स्त्रेप या परिहारे या ॥

—व्यवहार सूत्र ४।१६।

बहुत से सार्धामक साधक, ग्रभिन्नरूप एकत्र होकर विचरण करना चाहें, तो उन्हें स्थिवर भगवान की ग्राज्ञा लिये विना ऐसा करना नहीं कल्पता, हां, स्थिवरों से पूछ कर ग्रीर वे श्राज्ञा प्रदान कर देवें, तो ग्रभिन्नरूप से एकत्र होकर विचरण करना कल्पता है, यदि वे ग्राज्ञा न देवें तो नहीं कल्पता; जो साधक विना ग्राज्ञा लिये ग्रभिन्नरूप से एकत्र होकर जितने दिन विचरण करें तो उन्हें उतने ही दिन का दीक्षा-छेद व पारिहारिक तप का प्रायश्चित्त ग्राता है।।

गामाणुगामं दृइजमाणो भिनस्य य जं पुरश्रो कट्टु विहरह,
 शाहच विसुंमेजा, श्रात्थि या-इ त्थ श्रन्ने केइ उवसंप्रज्ञागारिहे, से उवसंप्रज्ञिः

के अध्य सान्य का कार्य केंद्र अपसंपालनाति, सान्य कापाले बायाव आपाल कामद्र के कुसाइयाए परिमाल कार्यो जलारे दिवं कार्य का आपाल किर्देशि कार्यो सालां दिवं उपिताल हो हो से बायद अध्य विद्यान लियं साला, कापद्र के साथ कारा-अधियं वापाल । हिंदि का हो बादानित विद्यान वहां स्वता 'सामदि कार्या ! स्वामयं का दूसमें का ' वृत्वे के जायद विद्यान वहां स्वता 'सामदि कार्या ! स्वामयं का दूसमानों का दूसमाने जार्य का बुसर्य का वापाल; तो से बायद वर्ष द्वारावालों का दूसमाने सामपाल हो साम्य वर्ष द्वारावालों का दूसमानों का कार्य, के बायाय केंद्र सामपाल हो साम्य वर्ष द्वारावालों का दूसमानों का कार्य, के बायाय केंद्र सामवाल क्ष्र कार्यका

मामानार्थं बार्गमिनिके निमार् (तहा ६३) महीत मा स्टिस्पे सा छ — सामाना मान शहर स

भागानुषाम विवयत मुद्दे हुए माध्य दिल यो भगवानी असा बार विस्तान बार को थे, वे साम कर ज्यान की पत नियानों में मोदि नायन सम्बाग यहाने मोध्य हो हो हमें समाध्य मना बार विभागा सरे, प्रमण उनमें मोई धारवान समाने के बोरम में हो (अपदा है एवं मानक विश्व कर विश्वी भी सम्प्रान्त स बन्ता सक्ते होते हो। यो सामक स्व सिन्ता हो स्पेत ंग बापी कण्डलकासार में केलन है समर्प हो, ही देवन की गत भागा भागानी भगाना भागा है तुसने कम क्षेत्र ने दिन्दे and of marcha apple haber all medant bes neben mag विकारिक विकास के जात है। इसकी क्षेत्र की तह रहे हैं। मार्थित होते प्रति स्थाना स्थानित । विकास से विश्वित सूर्य · 阿拉斯斯斯 北京者 按 · 如此情景,如此如此者是如果人家 如其我心实 就 多年代在公司 心情 其不知其 如果 斯特特 衛 真可非用者 非母母 我們 爱知 所可以 经物效率 化安全的 美生网络 and they have stated by the same the same france. BEET THE AT MEET THEFTHE BUTCHES HIT BE SHOWN A 新城林縣 斯多斯 野 新 新 斯 斯 斯 有 有 可以 明 斯 丁 हि चारी! एक-से सानि योग ठारों वा भी एक पा से रावि चोग पिक जारग जा सकता है किस्तुद्ध में उपरात नहीं। जो सावक इसमें उपरास्त नियों दिन ठारे उसे उसे वि दिस का बीक्षा-हैंद व पानिहास्कि त्याका पापित्स याता है।

इसी प्रकार चातुर्मान काल में ठारे साम में का यमनानी सामक काल-भर्म की प्राप्त हो जाए तो उसे भी उपरोक्तानुसार करना कलता है जो मार्ग में एक-यो राजि उपरान्त ठहरे तो उसे उत्तने ही दिन का दीक्षा-छेद न पारिहारिक तम का प्रायदिचत खाता है।।

१२. गामाणुगामं वृद्कमाणा निमांशी य जं पृश्वी काउं तिहाइ सा शाहरून चीमुंभेजा, क्षायि याद्वाय काह शजा उत्तरंपज्ञणारिहा, सा उत्तरंपिज्ञणारिहा, किया याद्वाय काइ श्रजा उत्तरंपज्ञणारिहा, तीमे य श्रप्यणो कप्पाण श्रसमाथे, कप्पद्द सा पुगराद्याण पित्रमाण जग्मां जग्मां दिमं श्रजाश्रो साहमिमणीश्रो विहरंति तग्मां तग्मां दिमं उचिलत्तण । नो सा कप्पद्द तथ्य विहारवित्तयं चन्यण, कप्पद्द सा तथ्य कारण्यत्तियं वन्थण । तीस च र्या कारणीसि खिद्रियंसि परो वण्जा 'वसाहि श्रजो ! एगरायं वा दुरायं वा' एयं सा कम्पद्द पुगरायं वा दुरायं वा व्यथण, नो सा कप्पद्द पर एगरायाश्रो वा दुरायाश्रो वा चस्थण । जा तथ्य परं एगरायाश्रो वा दुरायाश्रो वा वसद, सा सन्तरा छेण वा परिहारे वा ॥

वासावासं पजोसविया निग्गंथी ''(जहा ११) · छेग् वा परिहारे वा ॥ —स्यवहार सूत्र ५।१२॥

साधु के प्रकरण में जैसा अर्थ किया गया है उसी प्रकार यहां भी साघ्वी के रूप में समक्ष लेना चाहिये। विशेष इतना है कि 'नो कप्पइ निग्गंथीए एगाणियाए होत्तए'—वृहत्कल्प सूत्र प्रा१४॥ के अनुसार कल्पाचार में समर्थ होते हुए भी और

कर्ष महीने पर भी इसरी जगह जाते एककी न जावे, कम-मैन्स दो मिन कर स्रोर मागे में एक-एक रामि ठहरने की दिता पारण गरके जावें।।

13. सातिय-उद्याकाम् विज्ञायनाधे साहयरे प्रकृता 'हाले! सह सं काराणि वार्यामामि वार्य समुक्रीसको। से व समुक्रानदारिहे, समुक्र-रेलाचे; से व सी समुक्रायदारिहे, तो समुक्रायिको। व्यक्ति पाइमा वार्ते केर समुक्रमाहरिहे, से समुक्रायिको, सीच पाइमा बाले केड् समुक्रमाणा-रिहे, तो केर समुक्रायिको। तीव व वो समुक्रिट्रीय परे पएना 'तुम्ममु-किट्ठे' हे कारो। जिल्लाहरि' सहस्य वो निविध्यासायस्य क्रीचे केड् होए वा व्यक्ति ता। तो समुक्रीयका ब्यायकोनं तो बहाए विद्राल, सक्ष्यी

---अस्तर्भा सूत्र सार्वेश

मान्यिकतानावरण्यं कोन्द्रायमार्थः । । (कहा १६ रायः विवस्तायिके । म्याने निर्दर्शनियोके हे । । । भेष्यं सा यरिहाने मा स

---कारकार स्था भा**त** भाव भाव

शानाचे एयाच्याय महाराज रोग-यान में मीर वाहे पत्रा प्राप्तुण ममीन दिलाई दे रहा हो वस समय स्वय रागाच्याय नाम यान्तेन स्वति की पास मृत्य नाम के महे कि हे साम है मेरे कान कार नाम पर उस पत्र पत्र स्वाह की सप्ताह देश कान साम पर उस पत्र पत्र स्वाह स्वयू र प्राप्ताय प्रचेत स्वति वस की प्रशेश करें, यदि स्वह देश यद न यहंगा हो से यह दिया का तो यह पत्र प्रशास एक देशे हैं हिएन यदि यह इस पद है संशय स्वाह की की एक पह यद गाई देख, त्रवाद स्वाह विचा का पह ने योगा दिलाई देखा ही सह यह ता स्वाह विचा का देश साम है स्वाह स्वाह सह स्वाह स्



जी सागर गुण को दोने (समा (सम् में करने ग्राम) जीवन भेषा रहे हो हो अपनाता सामार्थ, उपानात, प्राप्त 

(11) that many white plants of the reference मार्थे गानना गामको को नहीं कलात ॥ The state of the s SCHOOL WINDOWS MIT ENG. BANKE, BIRESTER WASHING STATE STATE BARNE LABORE STATE 为明明明 (明) 到明明 (mg) 年 200 Miller at I

MAN ART HAN THE THE MENT OF THE STATE OF THE THE THE PARTY OF T THE REAL PROPERTY OF THE PARTY THE THE THE PARTY HAVE MANY THE PARTY. Many was a second of the secon THE REPORT TO THE THE REAL PROPERTY OF THE PARTY OF THE P THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY O Backering backering Backering and Sharehale of the

(111) simulating in himming it where a best described from the way is The same of the sa which have a graph property that the first them will be



मीर मानार्ग, श्रमने प्रानार्थ पर का संप के समझ स्थान-स्तानी-प्राविधन देशन मेम भी द्रीह या। ब्रीह हो। ब्रीमा महीतार हो। क्षिण होने पर तीन वर्ष तथा हो। जो कोई पर जेना नहीं हत्या, हो -पापूर्व वर्ष दम असे में क्योंन समय वरणा और क्षत्र मंग्री प्रवेशानुसार होता हो हो। वोस्पतानुसार सोलाई कारिकोई भी पर दिया जा सकता है।।

[All sames and explosion of the same and sames WARREST AND A SECOND Sent along the Bearing at 11

[CII] Salestonia interioring Defendant september 1 february of the september 1 And Markey (1942 3124) ... Conferred the ft

सार्वे पूर्वीमासूर्वाण वास्त्रं, समा नार्वेण म

(4) (1) beste a mit lin entering mit, all and entering to be experience and the sail and dies the sail sails the sail sails with the state of the sail

MARKET THE RESIDENCE OF THE PARTY OF THE PAR Rest & Market State and St Samuel Bridge The state of the s The state of the s The second secon

मोई सायक गण माँ छोड़ कर बसंबमी वृत्ति कर ने बचवा परिवर्गी वृत्ति न भी करें परन्तु खादेश में प्रावर सापु-रंप मो छोड़ दे घीर गृहस्य-वेग व अग्यतीयी के वेग मों पारण कर में इस्तु सरकास मिलिज़ में बाकर पुन: उसी गण में साँग्यानित इस्तु सरकास मिलिज़ में बाकर पुन: उसी गण में साँग्यानित शंता माहे सी उसे कोई छेड़ व तर प्रावश्तित नहीं दिवा जाता सीता माहे सी उसे कोई सामितित काला है. उसे दिवीय-वार परितु माहेया 'मूल' प्रायदिनस काला है. उसे दिवीय-वार महादेख घारोपण करवा कर समय में उपस्कारन किया जाता है।।

्रितास्त्र एवं तिल्लु के प्रतिस्ति जी मृत्यस्त्रीय से मर्थया परित हो आए उसे भी माठले 'मृत' झाविचल माता है।]

क, संबंध में काम छाइर जाने के प्राप्त केल मूर्ति जी महारक्षण के, ध्वमण भगवतम् गताबीक स्थानी में डिलीय-आर महारक्षों की पारण विवार ॥

कृ स्वास्त्र वेद के स्वयापति स्वयापति अस्य विक्र सम्बद्धित स्वयादित । कृति स्वयापति स्वयापति स्वयापति स्वयापति । स्वयापति कृति स्वयापति । स्वयापति स्

मार्थ की भारते शाम वाष्ट्राविष्ट के जाती मार्थिक क्षाविष्ट अन्य अन्यवस्थान की ने साम्यामक स्वयुक्तिका न दिन मुश्तिकार विश्वास स्वयं विषयि पान्ति प्रविद्या कि स्वयं पान्ति प्रविद्या है कि स्वयं की वार्तिकार्य, स्वयं स्वयं स्वयं पान्ति स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं समार्थिक स्वयं शामिकार है

地 醇子素 电电路线 医性肝炎 经现代股 粗淡淡淡水 地名



Similarly County friends of the said these extended forest water free it - entack the x14x '24 gt

श्रमीत् सनगणात्म प्राथितम् नाम को विभा गृहस्य क्तात् ग्रंगम भ ज्याच्याच्य क्त्या ग्रामक्तिक की को गरी क्लाता, मनावकारक को उमें माहको समा कर वित्र गई

ात देवी पार्टिया

गामें प्रामिश्वत के घीरवारी— मनी कार्यामा वर्त्यामा मं प्रश्न-मार्थामामं हेर्न करेवाले है. काम अधिनवासी होनां हरेनागी २, इत्यानां पुत्रवनारी ३॥

—शतांत पूर श्रेषात्रमा, —पृष्ठवल सूर प्राथत

१. स्वमर्गी=स्वापः के सामु मान्यी के भंडीपकरण सन्य पत्र, सर्य पात्र, बार्य मसा बिन्य की भीरी करने वाल-विना पूर्वे क्षेत्र वान सामक की 'धनवर्षाना' नामक नवम प्राप-

२. पर्यमी=प्रमास अयोत् अन्यतीमी सापु, अगवा स्वमत रामा परमत दोनों प्रकार के मृहस्यों। के अण्डोपकरण की दिनत भागा है। ोरी करने यात सामक की 'भ्रनवस्थाप्प' प्रायदिवत

३. प्रस्पर में मारामारी भीर लढ़ाई पारने चाले [भ्रयवा भ्रास्त्रंग निमित्तं की प्रम्यणा करने वाले ] सामक की नवम मता है। 'स्रनवस्थाप्य' प्रायदिचल भाता है। (यताया हुमा ज्योतिष,

१. गानुनमं को क्रोचा सब गृहसा पर-धर्म च पर-पद में

भावे है।

२. युहत्कत्व सुत्र पूच्य प्रभोलक ऋषि जो महाराज ॥

गणित यादि में पृति रह लाने पर पुरा न छन्छे को सापृष्टी की स्पेर जिन-शासन को निन्दा होती है )

षाठनें 'मूल' प्रायश्चित में दोष प्रकट नहीं होता सौर इस नवम अनवस्थाप्य प्रायश्चित में दोष प्रकट रूप में (openly, in public) होता है इस लिए उसे लोगों के समक्ष मृहस्य का वेष पहिना कर फिर नई दीक्षा दी जाती है। 'यादि' शब्द से प्रकट रूप में भूठ बोलने वाले, गुशील सेवन करने वाले श्रादि प्रायश्चित्तयों को भी यह 'ग्रनवस्थाप्य' नवम प्रायश्चित्त दिया चोता है।।

## १०. पाराश्चिक-

तीर्थकरादीनां वहुश श्राशातनाकारिणि, नृपवातके, नृपाग्रमिहपीप्रतिसेवके, स्वपरपक्ष-कपाय-विषय-प्रदुष्टे, स्त्या-नर्द्धि निद्रावित पाराश्चिकप्रायश्चित्तम् । स त्वव्यक्तिङ्गधारी जिनकल्पिवत् क्षेत्राद्विः स्थाप्यते द्वादशवर्षाणि, यदि प्रमा-वनां करोति तदा शीष्ठमेव प्रवेश्यते गच्छे शुद्धत्वात् ॥

नई दीक्षा एवं गृहस्थ-वेप के श्रतिरिक्त जो दीर्घ समय (वारह मास उत्कृष्ट वारह वर्ष) तक विधि रूप से रहकर जो प्रायश्चित्त का पार पाता है उसे पाराञ्चिक नामक दसवां प्रायश्चित्त कहते हैं।

जो दोप, जितना प्रकट-रूप में होता है उसका प्रायश्चित्त भी उतना ही प्रकट-रूप में दिया जाता है। यदि ऐसा न किया जाए तो अपने तथा वाहिर के लोगों में यह अपवाद फैल जाए कि 'इन में तो ऐसे ऐसे कुकर्म करने वाले भी छिपे बैठे हैं।' सं प्रकार इस वेप की एवं जिन-शासन की निन्दा होती है।

गतः जो दोप जितने श्रंश में प्रकट-रूप हो, उसका प्रायरिक्त भी उतने ही प्रकटरूप में होना चाहिए। इसलिए दसवें

प्रायिष्यत्त का श्रिषकारी साधुवेप छोड़ देता है श्रीर गृहस्य
का कोई विशिष्ट वेप बनाकर (मस्तक पर चार श्रंगुल प्रमाण
का वस्त्र बांच कर) बारह मास श्रीर उत्कृष्ट बारह वर्ष
पर्यन्त साधु के सब नियमों का यथाविधि पालन करता हुआ
और ग्रामानुग्राम विचरण करता हुआ लोगों के द्वारा अनादर
अपमान को समभाव-पूर्वक सहन करता हुआ उतने समय का
पार पाता है, उस श्रवधि में यदि वह जिन-शासन की प्रभावना
करे तो समय घटा भी दिया जाता है, इस प्रकार समय पूरा
करके वह नई दीक्षा घारण करता है।।

ं दसवें प्रायदिचत्त के श्रधिकारी-

तस्रो पारंचिया परण्या तंजहा—दुट्टे पारंचिए १, पमने पारंचिए २, श्रयण्यमरुणं करेमाणे पारंचिए ३॥

—डाणांग सूत्र ३।४।१२॥, —वृहत्कल्प सूत्र ४।२॥

१. दुष्ट दो प्रकार के होते हैं, कपायदुष्ट श्रीर विषय-दुष्ट । कपायदुष्ट के दो भेद – स्वपक्ष-कपायदुष्ट श्रीर परपक्ष-कपायदुष्ट । स्वपक्ष-कपायदुष्ट के भी पाश्व भेद प्रतिपादन किये गए हैं—

पंचहिं ठाऐहिं समये निगांथे साहिम्मयं पारंचियं करेमाये गाइक्षमइ् तंजहा—कुले वसह कुलस्स भेषाप् श्रद्धमुट्टेता भवइ, गणस्स भेषाप् श्रद्धमुट्टेता भवइ, हिंसप्पेही, छिडप्पेही, श्रमिक्खणं श्रमिक्खणं परिवाप् तेषाइ पठता भवइ॥ —ठाणांग सूत्र ५१९१९॥

(क) जिसे कुल में रह रहा है, उसी में फूट डलवा कर

्रे. मापु साधु के माथ और साध्यों साध्यों के साथ इस्तंत्र विषय सेवन करे।

इन सब की दसवां 'पाराश्विक' प्रायदिवत नेना होता है । तीर्षेक्द देव की, केविन-प्रकृषित साहत एवं जिन-धासन को बहुत बारे प्रायातना करने वाला भी इस दसमें पाराञ्चिक अमुस्तित का प्रमुखान कर प्रपनी प्रात्मा को घुद बना वकता है ॥

् फुछ गोतायों को घारणा है कि नवम प्रायद्वित्त उपाष्याय को तथा दलम पाराध्विक प्रायद्वित्त घालायें को दिया जाता है।

किसी का कहना है कि ये दोनों प्रायश्चित, चीदहपूर्व का नान और प्रयम संहनन न होने ने तप की भ्रमेका व्यवच्छेद हो चुके हैं, और कोई कहता है कि यह दसवां पाराञ्चिक प्रायश्चित्त पूर्णतया विच्छेद है।

किन्तु पृष्ठ ५७ में व्यवहार सूत्र २।२२,२३ के श्रनुसार अपवाद रूप में नवमें तथा दशमें प्रायश्चित्ती को श्राठवां मूल आवश्चित्त भी दे दिया जाता है॥

एवं सद्यं दिज्ञित जेएं सो संजमे थिरो होति । न य सन्वहा न दिज्ञित त्र्राण्वत्थपसंगदोसातो ॥ -प्यवहार सूत्र बहेश १० भाष्यगाषा ३८०॥

(१) श्रतिकम का प्रायश्चित्त 'श्रालोचना'। प्रमाद की कोहियां (२) व्यतिक्रम का प्रायश्चित 'प्रतिक्रमण' (मिथ्य डुच्छत देना)। (३) श्रंतिचार व सामान्य प्रमाद के श्रनाचार का प्रायश्चित 'तहुभय'। (४) उपयोग भङ्गः के श्रनाचार का प्रायश्चित्त (४) केवल काया, केवल वचन व केवल मन कें श्रनाचारों का प्रायिक्चित्त 'न्युत्सर्ग'। (६) विशिष्ट प्रमाद से उद्भूत श्रतिचार व श्रना-चारों का प्रायश्चित्त 'तप'। (७) कुछ जान-वूम कर सेवित अनाचार का प्राय-विचत्त 'छेद'। ्(८) सर्वथा जान-व्रुक्त कर श्रासेवित श्रनाचार का प्रायश्चित्तं 'सूल'। (९) प्रकट रूप से जान-वूम, कर सेवित भ्रनाचार का प्रायश्चित्त 'ग्रनवस्थाप्य'। (१०) महान् अनथॉत्पादक जान-व्रुक्त कर सेवित श्रनाचार का प्रायश्चित 'पाराञ्चिक' ॥ ये प्रायश्चित जिन २ में हो सकते हैं वे इस प्रकार हैं — पुलाक निर्मन्य में छः प्रायश्चित्र गालोचना १, प्रतिक्रमण २, तदुभय ३, विवेक ४, ब्युत्सर्ग ४, श्रीर तप ६ ही सकते हैं।

त भीर प्रतिभेषना-मुनीन भे दम ही प्रामिशन हो ्रियस्तु को जिन-सत्त्री हैं उनमें सादि में प्राठ ही हो नंग्रंन्य में दो प्रायक्षित ही सनते हैं, धालोचना श्रीर स्तातक में केवल एक विवेक प्रायम्बित होता है॥ ₹. 1

सामापिक-चारित्री में छेर भीर मूल की छोड़ कर लेप भाठ प्रायश्चित हो सकते हैं। किन्तु जो नामायिक-चारियो जिन-कली हैं उनमें प्राध्मि छः प्रामित्रित हो हो सक्ते हैं।

हिरोगस्यापनीय-नारियों में दस ही प्रायध्रित हो समते है किन्तु जो हिदोपस्यापनीय जिनयत्यी है उनमें श्रादि के श्राठ

परिहारियगुद्धि-नारियो में भ्रादि में भ्रादि में भ्रादि में प्राविष्ठत ही हो सबते हैं।

हारविगुद्धि-वारित्री जिन-गल्पी है उसे हेद श्रीर मूल को छोड़

कर प्रादि के छः प्रायश्चित हो स्कृते हैं। मूहमसम्पराय-नारित्रो श्रीर यथान्यात-नारित्री में दो. प्रायस्वित हो सकते हैं—ग्रालोचना ग्रीर विवेक ॥

पायच्छिते असंतमिः चिर्त्तिषे ण बहुती।

षायिन्ति दो प्रकार के होते हैं-कालम प्रीर दिलम। श्रालोचना श्रायश्चित्त किल्पिम श्रामश्चित्त के नेप नव प्रकार के प्रायश्चित्त सब-के-सब दिल्ला प्रायश्चित हैं? १. कलानीय, स्त्रानस्म करने योग्य कार्यों का स्नालीनना-पायरिचत, श्रतिकम की संभावना की श्रपेना से है। २. तं पुण होडमा सेविय दलेगां श्रहन होडन कलोगां। दणेगा दसविहं त् इगामो तुन्हुं समासेगां॥ दण व श्रकण निरालंग नियत्ते श्रपसत्य वीसलो । त्रपरिच्छं श्रक्तं जोगी श्रणासुयानी य गिस्तं को ॥ - ज्यवहार सूत्र उद्देश १० माध्यमाथा ६३३, ६३४॥ —दर्ष निष्कारमां धावन-यल्मन-वीरयुद्धादिकरमां १। श्रकल्पोड-परिण्त-पृथ्वीकायादिग्रहण्मगीतार्थानीतोपिष-शस्त्राहाराशुक्मोगश्च २ । निरालम्बो ज्ञानाद्यालम्बनरिहतप्रतिसेवनाको ३ । वियत्ते ति परैकदेशे .पदसमुदायोपचारात्यककृत्यः संस्तरन्निव सन्तकृत्यं प्रतिसेन्य त्यकचारित्र इत्यर्थः ४ । श्रमराम्तो वलवर्णादिनिमित्तं प्रतिसेवी । ५ विश्वस्तः स्वपद्यतः परपद्यतो वा निर्भयं प्राणातिपातादिसेवी ६ । श्रपरीत्ती युक्तायुक्तपरीचाविकलः ७ । श्रक्तयोगो श्रगीतार्थः । त्रीन् वारान कल्प-मेवसीयं चापरिभान्य प्रथमवेलायामिव यतस्ततोऽल्वानेपसीयमिव याही ८ । अननुतापी श्रावादपदेन कायानामुपद्रवेऽपि कृते परचात् अनु-तापरिहतः ह । निःशङ्को निर्दयः इहपरलोकराङ्कारिहत इत्यर्थः १०॥ चउवीसई विहार्ण तमहं खुच्छुं समासेरा॥

## देप्पिय प्रायश्चित्त ज्ञान-विषयक, दर्शन-विषयक ग्रीर चारित्र-

दंसण्-णाण्-चिर्ते तव-पवयण्-समिति-गुत्तिदेउ वा । साहिम्मयवच्छ्रल्लेण वावि कुलतो गणस्स वा ॥ संपरसा-ऽऽयरियस्स य ग्रसहुस्स गिलाण्-वाल-युद्दस्स । उदय-णि-चोर-सावय-भयं-कन्ताराऽऽवत्ती-वसणे ॥ —व्यवहार सूत्र उद्देश्य १० भाष्य गाथा ६३५, ६३६,६३० ॥

—दर्शने दर्शनप्रभावकं शास्त्रप्रहणं कुर्वन्नसंस्तरणे १। शाने स्त्रमर्थे चाषीयमानो श्रमंस्तरणे २। चारित्रे श्रनेपणादीपतः स्त्रीदीपतो या चारित्रः कृषाय ततः स्थानादन्यत्र गमने ३। तपि विष्टुष्टतपीनिमित्तं शृतपानादि ४। प्रवचनरन्नादिनिमित्तं विष्णुकुमारादिरिच वैक्रियकुर्वाणार्दि ५। प्रवचनरन्नादिनिमित्तं विष्णुकुमारादिरिच वैक्रियकुर्वाणार्दि ५। प्रावचीनिमित्तं विष्णुकुमारादिरिच वैक्रियकुर्वाणार्दि ५। प्रावचीनिमित्तं विक्रयाने कृते मनोगुप्त्यादि स्वणादि ६। गुप्ती मावितकारणतो विकटपाने कृते मनोगुप्त्यादि स्वणानिमित्तं ६। एवं गणकार्यनिमित्तं १०। संत्रकार्यनिमित्तं ११, श्राचार्यनिमित्तं १२, श्रमहिनिम्तं १३, ग्लानिमित्तं १४, प्रतिपिद्धन्वद्वदीन्तिसमाधिनिमित्तं १६, उदके जलप्लवे १७, श्रमनी दवाग्यादौ १८, चौरे शरीरोपकरणापहारिणि १६, आपदे हिसा व्याघादावापतित यद्व्चारोहणादि २०। तथा भये म्लेच्छादिसमुत्त्ये २१। कान्तारे श्रद्धमानभक्तपानेऽप्यनि २२, श्रापदि द्वयायापत्तु २३। व्यसनं मद्यान-गीतगानादिविषये पूर्वाभ्यातः प्रवृत्तिः २४। तत्र यद्यतनया प्रतिसेवते स कल्पः। एतदेवाह—

एयन्नतरागाढे दसग्गनागे चरगासालंबो । परिसेविङं कयाई होइ समत्यो पसत्येसु ॥६३८॥

—एतेपामनन्तरोदितानामन्यतरस्मिन् ग्रागाढे (श्रावश्यके) समुस्यित-दर्शनज्ञानचरणसालम्बः प्रतिसेन्याकरूपप्रतिसेवनां 'कृत्वा कदाचित्य- विषयक होते हैं। वियत्त-किच्च=व्यक्तकृत्य अर्थात् कृतयोगी गीतायं द्वारा किये जाने वाले कार्य का प्रायश्चित्त, किष्पय प्रायश्चित्त होता है। इस प्रकार किष्पय श्रीर दिष्पय श्रायश्चित्तों में दसों प्रकार के प्रायश्चित्त समाविष्ट हैं।

जिस साधक के तप-रूप दिष्पय प्रायश्चित्त वाले कई प्रति-सेवना दोष एकत्र हो जाएं तो सामूहिक रूप से सब दोषों के प्रायश्चित्तों को मिलाकर जो एक प्रायश्चित्त कर दिया जाता है, उसे संजोयणा-प्रायश्चित्त कहते हैं।

किसी प्रायश्चित का अनुष्ठान करते हुए साधक नया दोष लगा बैठे तो उस दोष का प्रायश्चित पहले प्रायश्चित में बढ़ा दिया जाता है, इसको आरोपणा-प्रायश्चित कहा जाता है।

यानोनना करते समय यदि कपट का म्राचरण किया जाए तो इस कपट-मानरण का पृथम् रूप में प्रायश्चित दिया जाता है जिसे कि पलिकुज्नन-प्रायश्चित कहते हैं।

शर्माप् भूनेपु प्रयोजनेपु कर्तभेषु समर्थी भएति । तत एषा कल्पिका प्रतिसन्ता ॥

१. विविध प्राप्त दिन प्राणीत विज्ञास्त्राण-प्राणी-प्राप्त देवण-प्राणीय देव प्राप्त देव विज्ञालय देव ॥ — द्राणीय मूल शाहार ॥

 र दर्श पर पायी दुनि पण्णेत ते जदा—गाण-पायिन्द्रित, देसग्र-प्रथा दुन, चीर र स्वान्तिहर्न, नियमिक्किन प्रथित्दुने ॥

—रामाम भन सारावशी

 ३. उ.४) त्रं काची जुते काणांचे तंत्रद्याः— पत्रिमेवणा-पायिन्छने १. सन्दर्भाग्याः दुवे ४. आसीवणा-पायिन्छने ३. पिलावेनणा-पायः १.८० -- द्रान्याम् ४.४ ८४४॥

कर क्षा ५ हर । अस्तान अस्तान अस्ताना (क्रमालिस

जो साधक इन प्रायश्चितों को ग्रंगीकार एवं स्वीकार नहीं करता ग्रपितु ग्रपने दोपों को बढ़ाता ही चला जाता है, तो उस से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया जाता है जैसे कि —

पंचिंह ठालेहिं समग्रे निगान्ये साहम्मियं संभोइयं, विसंभोड्यं करे-माणे गाइकमाइ तं जहा—सिकिरिय-टाणं पडिसेवित्ता भवड, पडिसेवित्ता ग्रो श्राकोएइ, श्रालोएता ग्रो पिट्टवेई, पिट्टवेत्ता ग्रो गिव्यिसइ, जाइं इमाइं थेराणं टिइ-पक्रायाइं भवंति ताइं श्रद्यंचिय श्रद्यंचिय पडिसेवेइ से 'हन्द ! हं पिडसेवामि किं मे थेरा करिस्संति'।

--- ठाणांग सूत्र ५।१।१४॥

श्रयांत् जो दोप का सेवन करता है, सेवन करके उसकी श्रालोचना नहीं करता, श्रालोचना करने पर गुरुजन जो प्रायश्चित्त देवें वह श्रङ्गीकार नहीं करता, श्रंगीकार करके भी उसे उतारता नहीं श्रीर स्थिवर मगवन्तों ने जो मर्यादाएं वांघी है उन्हें वारम्वार तोड़ता है श्रीर कहता है कि 'हां ! मैं तो ऐसे ही करूँगा, देखूंगा स्थिवर मेरा क्या विगाड़ लेंगे'। ऐसे व्यक्ति के सम्भोग काट दिए जाते हैं।

इस प्रकार के जो प्रत्यनीक व्यक्ति हैं, उनके साथ सम्भोग नहीं रखे जाते जैसे कि—

श्रयीत् सीम तप करवाना), ठिवया (स्थापिता श्रयीत् स्थापन कर रखना), किष्णा (कृत्सना श्रयीत् क्रोध-रहित तप करना वह पूर्णतप है), श्रकिषणा (श्रकृत्सना श्रयीत् क्रोध सहित तप करना वह श्रपूर्ण तप है), हाडहडा (इतद्वता श्रयीत् श्रवस्था एवं शक्ति देखकर दिया नाया तप ॥

—टाणांग सूत्र ५१२१४॥

१. इन्द च गृहाणार्थे ॥८।२।१८१॥ —हेम-व्याकरण्॥

नीक में सूत्र, अर्थ श्रीर तदुभय तीनों प्रकार के प्रत्यनीक माने जाते हैं।

तपस्वी, रोगी श्रीर शैक्ष का अनुकम्पा-प्रत्यनीक तथा इहलोक, परलोक एवं तदुभयलोक का गति-प्रत्यनीक—ये छः प्रकार के प्रत्यनीक तो श्रपनी हानि तक सीमित रहते हैं परन्तु उपरोक्त नव प्रकार के प्रत्यनीक तो श्रपनी हानि करते हुए गच्छ की भी हानि करते हैं अतः उनके साथ गच्छ के सम्भोग काट दिये जाते हैं।

उपरोक्त प्रसङ्गों में तो, प्रायश्चित्त न होने तक १२ प्रकार के सम्भोगों में से कुछ सम्भोग काट दिये जाते हैं किन्तु जो प्रायश्चित्ती ग्रागमानुसार प्रायश्चित्त को ग्रङ्गीकार ही न करे, उसे तो गच्छ-वाहिर ही किया जाता है ग्रर्थात् उसके साथ गच्छ का कोई सम्भोग नहीं रहता जैसे कि कहा है—

मिक्तू य श्रहिगरणं कटटु तं श्रहिगरणं श्रविश्रोसवेता—नो से कप्पइ गाहा-वड्कुलं भत्ताप् वा पाणाण् वा निक्खिमत्तिण् वा पविसित्तिण् वा, नो से कप्पइ विदेया विवारमूमिं वा विहारमूमिं वा निक्खिमत्तिण् वा पविसित्तिण् वा, नो से कप्पइ गामाणुगामं दृहिज्ञत्तिण् वा, गणाश्रो गणं संकमित्तण्, वासावासं वा वत्यण् । जत्येव श्रप्पणो श्रायिय-उवज्ञमायं पासेज्ञा वहुस्सुयं वन्न्मागमं, कप्पइ से तस्सित्तिण् श्रालोण्त्रण्, पिडक्किमत्तिण्, निद्तिण्, गरिहित्तण्, विडिट्टितण्, विसोहित्तण्, श्रव्सुद्धितण्, श्रहारिहं पायिष्ठितं त्वोक्नमं पिढि-विज्ञत्तिण् । से य सुण्णं पद्विण्, श्राह्यक्वे सिया; से य सुण्णं नो पट्विण् नो श्राह्यक्वे सिया । से य सुण्णं पद्विज्जमाणे नो श्राहयह, से निज्जु-हियक्वे सिया ॥

कोई सायक किसी से क्लेश कर वैठे, जब तक वह क्लेश को शान्त करके क्षमा-याचना न कर ले, तब तक गोचरी को पाना, प्राप्ती को जन्म, रक्तापा करना, क्लिक करना, दूसरे सम्पूर्ण को सहिकार करना और आहारिय कर भी रापित कर का तो कर पानि कर समने दिन का पीआर्टेंट के पानि विक्रिक ना भी कर समने दिन का पीआर्टेंट के पानि विक्रिक ना भी सित् कर समने दिन का पीआर्टेंट के पानि विक्रिक ना भी सित् कर सम्मिन्त, पिक्रिक कर पानि कर सम्मिन्त, पिक्रिक कर पानि कर सामि कर सित सामि कर सित सित प्राप्ती के का मन में इड साहत्य कर भीर किये हुए का गयायोग निक्रात्य मृत्तानुसार प्रायश्चित पद्मीकार करें। यदि प्रायश्चित पद्मीकार के कारण, भागमानुसार म दिया जाए तो प्रायश्चित पद्मीकार के कारण, भागमानुसार म दिया जाए तो प्रायश्चित पद्मीकार के कारण, भीर जो सामक यूपानुसार दिये गए प्रायश्चित को सङ्गीकार के करें तो उसे विसम्भोगी घोषित करके गण्द-नाहिर कर दिया जाना नाहिंगे॥

जो तृतीयवार कपट का आनरण कर सभा में प्रायश्चित पा चुका हो और चतुर्यवार पुनः कपटाचरण करे तो उसे भी विसंभोगी गन्द-वाहिर कर दिया जाता है —

निर्ति ठालेहि समस्ये निमान्धे साहम्मियं संभोड्यं, विसंभोड्यं करे-मास्ये नाइनकमइ तं जदा—सङ्ं वा दृष्ट्ं, सिड्ट्यस्स वा निसम्म तच्चं मोसं श्राउहद्द, घडत्यं नो श्राउहद्द ॥ —ठास्यांत सूत्र ३।३।६॥

किसी ने दोप-स्थान सेवन किया, उसकी गुद्धि करने के हेतु उससे स्वीकार करवा कर प्रायिद्य देने के लिए उससे पूछा गया, उसने साफ़ इन्कार कर दिया, यदि प्रायिद्य देने वाले ने अपनी आँखों से उसका दोप-सेवन देखा है, तो उसे पूरा प्रमाण देकर प्रायिद्य देवे एवं गुद्ध करे। दोप-सेवन का प्रायिद्य और कपट कर फूठ वोलने का प्रायिद्य त

पृथक् देकर श्रीर फिर दोनों को मिलाकर संजयोणा-प्रावरिचत दिया जाए। यदि उसे दोष सेवन करते हुए को स्वयं न देशा हो तो जिस विष्वास-पात्र ने प्रपत्ती भीतों रेता हो। उससे सुन कर उस दोषों को प्रायदिवत

एक बार तो ऐसा कर दिया गया परन्तु उसने दूसरी बार फिर दोष का सेवन किया और पूछने पर भी फिर केपटाचरण कर भूठ बोला, तब भी उपरोक्त प्रकार से उसे प्रायश्चित दिया जाए। यदि वह तीसरी चार भी ऐसा करे तो उपरोक्तानुसार उसे

'दिया जीए ।

यदि वह डीठ चतुर्थं वार पुनः दोपनेवन करे ग्रीर पूछे भा के बीच संजीयणा-प्रायदिवत मिले। जाने पर माया करके भूठ बोले तो पूरा प्रमाण मिल जाने नाम नामा भारक कूठ जाल ता त्रूरा त्रनाम निर्ध अपितु पर उसे कोई प्रायश्चित देने की भावश्यकता नहीं अपितु उसे विसंभोगी कर गच्छ से बाहिर कर दिया जाता है।

कीन सायक भ्रपने कपटाचरण को छिपाता है भ्रोर कीन उसकी सम्यक् प्रकार भ्रालीचना करता है इस विषय में सूत्र-

तिहिं हाणेहिं मार्यो, मार्य कर्ह यो ग्रालोएजा, यो पडियक्सेजा, ची मिहेना, ची गरहेना, ची विउट्टेना, ची विसोहेना, ची शक्तवायाप कार प्रतिपादन करते हैं-ग्रहमुहदेना, ग्रो ग्रहाहिं पाणिक्युनं तवोष्ट्रममं पहिचयनेना तं जहा <sub>—ठायां</sub>ग सूत्र ३।३।९।।

गुर्काख बाहं, क्लेमि वाहं, किस्सामि वाहं॥

मायावी, कपटाचरण कर तीन कारणों से गुरु-साक्षी में नालोचना नहीं करे, मिय्यादुप्कृत न दे, नसे दुरा न समसे उसमें पूजा न करे, पागे के लिए न करने का संकल्प न करे. फीर फिल्मारों की सुद्धि कर यथायोग्य तप-प्रायश्चित्त पहण न करे। जैसे कि—

- (१) मैंने स्वयं यह कार्य किया, घव मैं इसकी कैसे निस्ता करों।
- (२) यह कार्य में धार भी कर रहा हूँ, इसको मैं कैसे इस ग्रा
- ें (३) पर्कार्य भैंने परभी करना है, इसलिए इसका वैकेपण जिल्लान

चिति चामेटि मापी, सार्प कर्यु को धानोक्ष्म को पितिकसेना नाव को वित्त मुक्ति वे ज्ञा -क्षिती वा से विषा, धवतने वा से विषा क्षित्र के से विषा ।

अंद्री खपने पाप को पक्ष करोगा तो मेरी सक्तीत
 अंद्री भरा पापणी गर होगा और (३) लोग मेरी
 अंद्री १३३ भी एन करगा।

१८८ १८८ - भागाः, मार्ग कर्युः स्थं त्यानीस्था नावः स्थे प्रतिकर्तताः
 ५० १८ १८ ४ १८८८ ग्याहः, तस्ये सः मे प्रतिहरूरभ्यः, प्रयादक्तारे प्रतिहरू १८०८ १८

- त्राहरू हो विदेशिक स्थामी (१) कर्मण १८ १ (१) १०० (१) भूग पुना मोट मनादक स्थाप १०८४
- ्रा । वा राज्या मानुष्या भाषा विश्वता सा सिर्द्या साम् राज्या के का व्यक्तिकार से स्थास व्यक्त समीरण व्यवह, इत्तरण राज्या का द्वार के स्थान वा वस्ता ।
  - ंदर राज्य राज्य । स्वास्त्र स्वयं स्वयं

जाओं से धालीपना करते हैं, निय्यादुष्ट्रत ऐते हैं, उसे गुरा रमभने हैं, उस क्यडाकरण में पूजा करते हैं, धाने को न करते का हुट सन्द्रान्य मन में पारण करते हैं घोर नमें हुए घतिनारों की पुद्धि कर उम का समान्योग्य प्रायदिक्त पहुंच करते हैं—

- (१) मदि में भवना धार गुष्त रुद्रंग सो गहु पनी गुष्त न रह सकेगा फिर मोगों में धिमक्ष निन्दा गर पात्र बन्गा ।
  - (२) माया-बह्य से मृत्यु पाकर दुर्वति में जाना पहेगा ।
- (३) यहाँ प्रापु समान्त करके पिर मनुष्य लोक में प्रश्नेष्ठ हुलों में जनम पारण करना पड़ेगा ।

निर्दे रालेदि मापी, मापं कर्टु शालेपुत जाव परिवरीमा सं जहा— श्रमावित्य में शर्मित मोगे प्रयोध भवर्, उत्पाप प्रसाध भवर्, शायाई यमको मधर् ।

(१) प्रपनी भूत मानने से घीर उसका परणात्ताप करने से इसं लोक में प्रमंता होती है कि 'घन्य है जो प्रपमा जन्म सुमार रहा है।'

(२) घालोचना करने से जिनाझा का घारापक होता है घोर मृत्यु के पद्यात् इन्द्र के सामानिक देव घादि की पदवी याता है।

(३) यहाँ से श्रामु पूर्ण कर फिर श्रेष्ठ कुलों में जन्म धारण करके श्रपना कत्याण करता है।

तिर्दि रायेहिं मायी, मार्य कर्टु बालोएमा जाव पश्चिम्नेमा सं वहा— न्यासह्याप, इंससहस्राप्, चित्तहस्राप् ॥ — रायांग सूत्र ३१३।३॥

इत्तम जीव ध्रपने ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की वृद्धि के लिये अपने कपटाचरण की धालोचना करके उसका प्रायदिचत्त श्रंगी— कार करते हैं॥

षाविरिव-टयम्माण् गर्णासि श्राणं वा धारणं वा नो सम्मं वडीनता भगह १, धाविरिव-टयम्माण् गर्णासि श्राहारायणियाण् किट्यम्मां वेणाह्यं नो सम्मं वडीनिता भगद २, धाविरिय-उयम्माण् गर्णासि ने स्वयं ने सम्मं वडीनिता भगद २, धाविरिय-उयम्माण् गर्णासि सगिविषाण् वा परगिष्पाण् वा निग्मंथीण् (सिद्धि) बहिलेस्से भग्रह ४, मिन्ते-णाह्मणे वा से गणायो श्रायकमोत्रता, तेसि संगहीयगाहह्याण् गणावरकमणे परण्यते ५ ॥
——टाणांग सृत्र ५१२१३७॥

- (१) जिस गच्छ के श्राचार्य उपाध्याय श्रपने गण में श्राज्ञा= स्पर्गना, धारणा=श्रद्धना श्रीर प्ररूपणा श्रयवा श्राज्ञा=विधिरूप श्रादेश,धारणा=निषेधरूप श्रादेश सम्यक् प्रकार नहीं देते श्रीर गण से पालन नहीं करवाते, जिसके मन में जो श्राए सो कर गुज़रे; उत्सूत्र प्ररूपणाएं चलती हों श्रीर विपरीताचरण किये जाते हों, कोई पूछने वाला न हो कोई रोकने वाला न हो, जहां सारणा वारणा न हो तो ऐसे गच्छ को छोड़ देना चाहिये।
- (२) जिस गच्छ के श्रिषिकारिगण श्रपने गण में छोटों से चड़ों का श्रादर-मान श्रीर विनय-भक्ति नहीं करवाते, जिस गच्छ में छोटे वड़े का कोई लिहाज नहीं सर्वत्र श्रापा-धापी व्यापी हो तो ऐसे गच्छ को छोड़ देना चाहिये।
- (३) जिस गच्छ के श्रधिकारिगण सावकों को शास्त्र-स्वाघ्याय नहीं करवाते तो उस गच्छ को छोड़ देना चाहिये।
- (४) जिस गच्छ के ग्रधिकारिगण साब्वियों से (स्त्रियों से) ग्रनुचित सम्पर्क रखते हों तो उस गच्छ को छोड़ देना चाहिये।

जिंद निश्य सारणा वारणा य, पिडचोयणा या गच्छंमि ।
 सो उ ध्रमच्छो गच्छो, मोत्तव्दो संजमत्यीहिं॥



(७) मन्तृत्वान—सामने स्नात एसी का, सामन त्वागत

्नेहें होतर मन्मान करना परनुत्वान नम्भोग है।

- (=) कृतिनमं वन्यना कृतना कृतिकसं नाम्भोग है।
- (६) वंबावृत्य-माग्रत्याची, वह्यमात्र, पोठमालक चादि लागर हेना. जन्मार प्रथम परिस्तापन करना ग्रीर विसी यक्ति को जाना करने में सहायता देना इत्यादि सब

(१०) तमोगरण—एक भकान में ठहरना समोसरण-वेवापृत्य सम्भोग माना जाता है।

(११) निषया—एक कमरे में प्राप्तन लगाना, निषया-तंद्रमंग है।

सम्मोग है।

(१२) क्या-प्रवन्ध-एक स्थान वेठ कर परस्पर वार्तालाप, विचार-विनिमय करला, कथा-प्रवन्ध-सम्भोग होता है।

इत सम्मोगों की इस गोटियां होती हैं—

- (१) प्रथम कोटि में सब के सब तस्भोग गुले रहते हैं।
- (२) दूसरी कोटि में भक्तपान-सम्भोग, दिव्यप्रदान-सम्भोग प्रीर करना का सम्भाग-इन तीनों को छोड़ कर केप नव

सम्मोग खुले रहते हैं।

(३) तीसरी कोटि में उपिय-सम्भोग श्रीर बन्द हो जाता है और चार की छोड़ कर क्षेप स्राठ कुले रहते हैं। (४) चीर्या कोटि मं प्रज्जनिप्रप्रहण सम्भोग ग्रीर वन्द

होकर कुल ५ बन्द होते हैं और सात सुले रहते हैं।

/...। पार्वी कोटि में निकाय बन्द हो



स्वित्त - स्वाह स्वयंत

ATT TO SECURE STATE STAT न्यान्यां क्यान्यवस्थानामांग को सोस्पर हेल ११

(२) सन्तमस्त्रोगी—सन्तरम्योगी हे गाय सत्तान म्हरीय विकास स्थाप संस्था स्थाप कृतिसर्थ स्थाप — वे

(३) पासत्यादि वञ्चकुरोल-जनमे उपरोक्त सीम तथा क्षेत्र ग्रम्भोग गमन्त्र गाम वृद्ध रहते है। स्पित नस्योग सन्दर्शासम्प्रणाला, नियान सोर सन्तुःसान — स्वाः

मान को दोष्ट्र कर विचार न्य में के बार कर होतर र ७ वन्द्र स्ति है गरन समान्यत् और गारित्र गुन्तीत है। कर तिरियत केव तीन से पुरासम्भोग सम्बाद-स्प हे होता है विन्तु ययाच्य्रत्व के भूतन्त्रमाग, निष्यान्त्रमाग भीर गमान प्रवचनम्बोग ये तीन घोर बन्द होतर गुन १० सम्भोग कुल ११ सन्त्रोग वस्य होते हैं जिल्ला प्रधिकरणोपयमगरूप स्त्रा ११ सन्त्रोग वस्य होते हैं विवायुर्व सम्भोग जीवत मीमा तक मुला स्तूता है श्रीर नेप

सय में सब चत्द होते हैं।

(४) विसम्मोगी—विसम्मोगी दो प्रकार के होते हैं एक प्रायक्ततो और दूसरा प्रप्रायक्तितो अर्थात् जो श्रुतानृसार प्रायस्वत न तेता हो श्रीर वह जो तिली दोप का नेवन करते हुए तीन बार प्रायस्थित ले जुला हो और किर जाउँ करते हुए तीन बार प्रायस्थित ले जुला हो और किर जाउँ वार हती दोष का भवन करके प्रायदिवत योग्य न होगार याहिर क्षिया गया हो, ऐसे अप्रायित्रितियों श्रोर प्रायदिवितयों, आहर निया के विसम्मोनियों से कोई सम्मोग नहीं होता। दोनों प्रकार के विसम्मोनियों से कोई सम्मोग नहीं होता। प्राथित्वती, प्राथित्वत कर चुक्ते पर सम्भोग योग्य होता है। (५) संयतीवर्ग-साध्ययों से, उत्सर्ग ग्रीर ग्रपवाद

## अभिमत

"हन सुशील कैसे वनें ?"

यह सुन्दर कृति साधु-जीवन को उन्नत करने में बहुत ही उपयोगी और लामप्रद है। कुछ ही पृष्ठ पढ़ने से हृदय, ऐसी बहुमूल्य कृति के लिये लेखक के श्रम को वार २ सराहने लगा। आज के युग में ऐसे पुस्तक-रलों की और भी अधिक ग्रावश्य-कता है। नवदीक्षित युवा मुनियों को तो इस से अनिगनत लाभ हो सकते हैं जो कि उन्हें संसार में पूज्य ही नहीं—आदर्श-मुनि भी सहज में ही बना सकते हैं। लेखक के पुनीत अथ च सराहनीय परिश्रम को यदि वे सार्थक करेंगे तो लेखक को ही नहीं, मुझे भी महानू हुई हुए विना न रहेगा। ऐसी उत्तम कृति को लिखने में महानू श्रम के लिये लेखक को पुनः पुनः धन्यवाद।।

—चन्दन मुनि पट्टी (भरतसर) विषयक वार्तालागरम कपावनस-सम्भोग के श्रतिरिक्त श्रीर कोई सम्भोग नहीं होता।

(६) गृहस्यवर्ग—गृह्स्यियों से, श्रपवादरूप वाचना में छोड़कर, विधिपूर्वक पृच्छना श्रादि श्रुतसम्भोग के स्रितिर श्रारम्भ के १० सम्भोग नहीं होते, श्रयीत् पृच्छनादि श्रु सम्भोग, निपद्या-सम्भोग, श्रोर वार्तालापादि कथा-प्रवत्त सम्भोग—ये तीन सम्भोग होते हैं। गृहस्थ-स्त्रियों से ये ती भी नहीं होते। पुरुपों में भी योग्य गृहस्थों से होते हैं सामान्यतया भगवान् का श्रादेश है कि 'गिही संथवं न कुण्ण कुण्जा साहूहिं संथवं —दश्वैकालिक सूत्र दाप्रशा तथा कि स्त्री-पुरुपों के संसर्ग से संयमी-जीवन श्रीर ज्ञान-च्यान को क्ष पहुँचती हो जन नर-नारियों का सम्पर्क छोड़ दे चाहिये 'जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा किसणं नियच्छा नर-नारि पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू'। उत्तराघ्ययन सूत्र १४।६॥

कल्पानुसार किसी साधक का दुःख निवारण करना श्रीर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की वृद्धि होतों हो तथा धर्म-विनय लाभ होता हो तो अपवादरूप से इन उपरोक्त सभी कोटियों सम्भोगों में हेर-फेर भी हो जाता है॥



## अभिमत

"हन सुशील कैसे बनें ?"

यह सुन्दर कृति साधु-जीवन को छत्रत करने में बहुत ही उपयोगी श्रोर लामप्रद है। कुछ ही पृष्ठ पढ़ने से हृदय, ऐसी बहुमूल्य कृति के लिये लेखक के श्रम को बार २ सराहने लगा। आज के युग में ऐसे पुस्तक-रलों की और भी अधिक श्रावश्य-कृता है। नवदीक्षित युवा मुनियों को तो इस से अनिगनत लाम हो सकते हैं जो कि छन्हें संसार में पूज्य ही नहीं—आदर्श-मुनि भी सहज में ही बना सकते हैं। लेखक के पुनीत अथ च सराहनीय परिश्रम को यदि वे सार्धक करेंगे तो लेखक को ही नहीं, मुझे भी महानू हुई हुए विना न रहेगा। ऐसी छत्तम कृति को लिखने में महानू श्रम के लिये लेखक को पुनः पुनः धन्यवद॥

—चन्दन मुनि पद्दी (मस्वसर) विषयक वार्तालापरूप कथाप्रवन्ध-सम्भोग के अतिरिक्त और कोई सम्भोग नहीं होता।

(६) गृहस्थवर्ग—गृहस्थियों से, अपवादरूप वाचना को छोड़कर, विधिपूर्वक पृच्छना आदि श्रुतसम्भोग के अतिरिक्त आरम्भ के १० सम्भोग नहीं होते, अर्थात् पृच्छनादि श्रुत-सम्भोग, निपद्या-सम्भोग, और वार्तालापादि कथा-प्रवन्ध-सम्भोग—ये तीन सम्भोग होते हैं। गृहस्थ-स्त्रियों से ये तीन भी नहीं होते। पुरुपों में भी योग्य गृहस्थों से होते हैं। सामान्यतया भगवान् का आदेश है कि 'गिही संथवं न कुण्णा, कुज्जा साहूहिं संथवं'—दशवेकालिक सूत्र ६।१३॥ तथा जिन स्त्री-पुरुपों के संसर्ग से संयमी-जीवन और ज्ञान-ध्यान को क्षित पहुँचती हो उन नर-नारियों का सम्पर्क छोड़ देना चाहिये 'जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा किसणं नियच्छइ। नर-नारि पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू'॥ उत्तराध्ययन सूत्र १४।६॥

कल्पानुसार किसी साधक का दुःख निवारण करना ही श्रीर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की वृद्धि होती हो तथा धर्म-विनय का लाभ होता हो तो अपवादरूप से इन उपरोक्त सभी कोटियों के सम्भोगों में हेर-फेर भी हो जाता है।।



"हम सुशील कैसे वने ?"

यह मुन्दर कृति साधु-जीवन को उन्नत करने में बहुत ही उपयोगी श्रीर लामप्रद है। कुछ ही पृष्ठ पढ़ने से हृदय. ऐसी बहुमूल्य कृति के लिये लेखक के श्रम को वार २ सराहने लगा। आज के युग में ऐसे पुस्तक-रतों की और भी अधिक श्रावश्य-कता है। नवदीक्षित युवा मुनियों को तो इस से अनिगनत लाभ हो सकते हैं जो कि उन्हें संसार में पूज्य ही नहीं—आदर्श-मुनि भी सहज में ही वना सकते हैं। लेखक के पुनीत अथ च सराहनीय परिश्रम को यदि वे सार्थक करेंगे तो लेखक को ही नहीं, मुझे भी महान् हर्ष हुए विना न रहेगा। ऐसी उत्तम कृति को लिखने में महान् श्रम के लिये लेखक को पुनः पुनः धन्यवाद॥

—चन्दन मुनि पट्टी (भरतसर)